वाणी वितस्ता की

कश्मीरी लोक गीत

संकलन एवं अनुवाद

पृथ्वी नाथ मधुप

शास्त्र पुस्तकालय
(संचालक ...)
क्रमांक ... 459

वाणी वितस्ता की

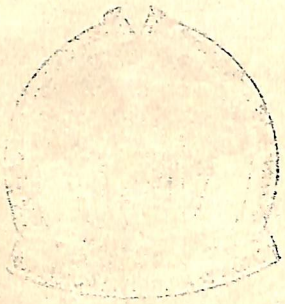

कश्मीरी लोकगीत

संकलन एवं अनुवाद :
पृथ्वी नाथ 'मधुप'

जम्मू एण्ड कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज,
जम्मू

जे० एण्ड के० अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज,
बहू फोर्ट, जम्मू द्वारा प्रकाशित

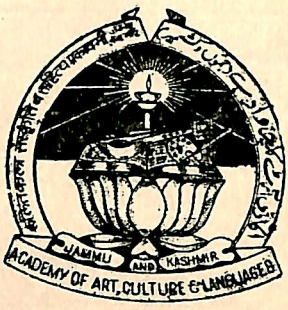

प्रथम संस्करण : 1975
मूल्य : 6 रुपये 52 पैसे

C. अकादमी

प्रथम बार : 500

डोगरा प्रिंटिंग प्रैस, कच्ची छावनी, जम्मू में मुद्रित

अनुक्रम

पूर्वपीठिका	...	...	1
लोरियां			
मां बलिहारी	...	...	13
तोहे हलराऊं, दुलराऊं	...	....	14
दुग्ध-पोष्य...	...	...	15
सुलाऊंगी तुम्हें...	...	...	16
कली बाग की	...	...	17
सुन्दर कोमल मेरी रानी	...	...	18
गोदी में लूंगी	...	...	19
महिला नृत्य-गान			
महीना भर...	...	...	23
आई ईद सुहानी	...	...	24
पीर के आस्ताने पर	...	...	25
रे गुलाब ओ	...	...	26
मधुप !	...	...	27
ताप ने कुम्हलाया	...	...	28
नीड़ रचा बुलबुल ने	...	...	29
न आयेंगे क्या वे कश्मीर	...	...	30
पियरवा रे	...	...	31
प्रियतम मेरे !	...	...	32
रोव	...	...	33

सेंध लगा कर...	...	...	34
हिय पादप	...	...	35
कृषक गान			
ढेले तोड़ने का गान	...	...	39
धान पनीरी रोपने ..	...	...	40
धान के अंकुर...	...	...	41
निराई का गीत (1)	...	...	42
निराई का गीत (2)	...	...	43
हास्य-व्यंग्य के गीत			
लवणाकाल	....	...	47
जाड़ा	...	...	49
विवाह-गीत			
वारू तुम पर...	...	...	53
सुन्दरी...	...	...	54
आंचल सम्भालो री	...	...	55
पुत्र जन्म का हर्ष	...	...	56
चुनरी गिरी	...	...	57
कैसे मैं सासू...	...	...	58
कहवा पिला दो	...	...	59
लाडला लैला लानें चला री	...	...	60
जैसे अनुग्रह किया लला पर	...	...	61
लो दन्तखोदनी चन्दन की	...	...	62
खुशियां छाईं	...	...	63
मंगल-गीत			
लीपा-पोती	...	...	67
निमन्त्रण	...	...	69
कूल बनाना	...	...	70
मेहंदी रात	...	...	72
दिबुंगोन	...	...	74

यज्ञोपवीत संस्कार	...	...	77
वीग्य वचन	...	...	80
विवाह-गीत	...	...	82
वीग्य वचन	...	...	88
खुतना	...	...	90
विवाह	...	...	91
मेहंदी रात	...	...	93
दूल्हे के ससुराल पहुंचने पर	...	...	95
लड़की को बिदा...	...	...	98
...स्त्रियों का लौटना	...	...	100
ससुराल जाते दूल्हे...	...	...	101

प्रकाशकीय

प्रकृति के विशाल प्रांगन में प्रस्फुटित एवं पल्लवित होने वाले कश्मीरी लोक गीतों के हृदयग्राही सौंदर्य को हिन्दी जगत तक पहुंचाने का प्रयास, सही सन्दर्भों में प्रथम बार, जम्मू-कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़ के तत्वावधान में किया जा रहा है। "वाणी वितस्ता की" में कश्मीरी लोक जीवन एवं लोक चेतना के विभिन्न स्तरों को रूपायित करने तथा वहां के जनमानस की उदार एवं निश्छल अनुभूतियों को सहज अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले लोकगीतों का चयन करने में 'मधुप' जी ने अतीव कौशल का परिचय दिया है। मूल कश्मीरी गीतों की लय को हिन्दी अनुवाद में यथावत रखने का प्रयास भी सराहनीय है। हमें विश्वास है कि हिन्दी जगत डोगरी लोक गीतों के संग्रह "थिरके पत्ता पीपल का" की ही भांति "वाणी वितस्ता की" का भी मुक्त हृदय से स्वागत करेगा।

रमेश मेहता
सम्पादक, हिन्दी विभाग

वाणी वितस्ता की

कश्मीरी लोकगीत

संकलन एवं अनुवाद :
पृथ्वी नाथ 'मधुप'

जम्मू एण्ड कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़,
जम्मू

जे० एण्ड के० अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज,
बहू मार्ग, जम्मू द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 1975
मूल्य : 6 रुपये 52 पैसे

C. अकादमी

प्रथम बार : 500

डोगरा प्रिंटिंग प्रैस, कच्ची छावनी, जम्मू में मुद्रित

अनुक्रम

पूर्वपीठिका	...	...	1
लोरियां			
मां बलिहारी	...	...	13
तोहे हलराऊं, दुलराऊं	...	....	14
दुग्ध-पोष्य...	...	...	15
सुलाऊंगी तुम्हें...	...	...	16
कली बाग की	...	...	17
सुन्दर कोमल मेरी रानी	...	...	18
गोदी में लूंगी	...	...	19
महिला नृत्य-गान			
महीना भर...	...	...	23
आई ईद सुहानी	...	...	24
पीर के आस्ताने पर	...	...	25
रे गुलाब ओ	...	...	26
मधुप !	...	...	27
ताप ने कुम्हलाया	...	...	28
नीड़ रचा बुलबुल ने	...	...	29
न आयेंगे क्या वे कश्मीर	...	...	30
पियरवा रे	...	...	31
प्रियतम मेरे !	...	...	32
रोव	...	...	33

सेंध लगा कर... 34
हिय पादप 35

कृषक गान

ढेले तोड़ने का गान 39
धान पनीरी रोपने 40
धान के अंकुर... 41
निराई का गीत (1) 42
निराई का गीत (2) 43

हास्य-व्यंग्य के गीत

लवणाकाल 47
जाड़ा 49

विवाह-गीत

बारू तुम पर... 53
सुन्दरी... 54
आंचल सम्भालो री ... 55
पुत्र जन्म का हर्ष 56
चुनरी गिरी 57
कैसे मैं सासू... 58
कहवा पिला दो 59
लाडला लैला लाने चला री 60
जैसे अनुग्रह किया लला पर 61
लो दन्तखोदनी चन्दन की 62
खुशियां छाईं 63

मंगल-गीत

लीपा-पोती 67
निमन्त्रण 69
क्रूल बनाना 70
मेहंदी रात 72
दिवुँगोन 74

पूर्वपीठिका

जनमानस से अनायास ही धाराप्रवाह रूप से प्रस्फुटित होने वाले पद्यमय भावों को लोकगीत की संज्ञा दी गई है। मनुष्य ने जब से होश संभाला है तभी से उसे प्रतिकूल प्राकृतिक स्थितियों का सामना कर अपने आप को जीवित रखने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ा है। अपने जीवन एवं अस्तित्व को कायम रखने के लिए उसे कभी विजयानन्दसनी मुस्कान मिली है और कभी हार की निराशामय उच्छ्वासें। जीवन को सुखकर बनाने के लिए कठोर श्रम करते हुए जन को प्रतिकूल स्थितियों से जूझना पड़ा है, संघर्षरत रहना पड़ा है। श्रम, सफलता, असफलता, विजय तथा पराजय की स्थितियों से गुज़रते हुए उसने स्वभाववश अपने उद्‌गारों को भाषा दी है—यहीं से लोकगीतों का जन्म हुआ है।

देहातों के सरल, सुखद, अकृत्रिम वातावरण एवं वनों के शुद्ध, सुगन्धित समीर तथा प्राकृतिक सुषमा के मध्य स्वच्छन्द रूप से जन्मे लोकगीत जन के लिए संजीवनी हैं। श्रम सीकर बहाते हुए जन जब ऊंची आवाज़ में गाते या गुनगुनाते हैं तो उन्हें थकावट कम महसूस होती है। अपने उबा देने वाले माहौल से कुछ सीमा तक कट कर उन्हें उत्फुल्लता एवं शान्ति का एहसास हो जाता है। वे स्थितियों का अधिक उत्साह से सामना कर सकते हैं। उनमें जीवन जीने की आकांक्षा प्रबलतर होने लगती है।

लोकगीत ऐतिहासिक तथ्यों, सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं तथा स्वच्छन्द-भाषा एवं इस के विशेष शब्दों को अपने में सुरक्षित रखते हैं। इस कारण लोकगीतों का अध्ययन ऐतिहासिक, सामाजिक तथा भाषावैज्ञानिक आदि दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इतना ही नहीं सृजनात्मक साहित्य की नींव भी लोक साहित्य को ही माना गया है। अतः किसी भाषा के साहित्य के अध्ययन की दृष्टि से भी लोकसाहित्य (अर्थात् लोकगीत भी) अपना एक विशेष स्थान रखता है। किसी भी देश के लोकसाहित्य में उस देश एवं राष्ट्र की संस्कृति का अमित भण्डार भरा रहता है एतदर्थ सांस्कृतिक-अध्ययन की दृष्टि से भी लोकसाहित्य का अध्ययन नितान्त आवश्यक है।

कश्मीर के इतिहास, संस्कृति, भाषा एव सामाजिक जीवन आदि का परिचय प्राप्त करने के लिए यहां के लोकसाहित्य का अध्ययन अनिवार्य है।

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत संग्रह में लोकसाहित्य के प्रधान अंग लोकगीतों की एक झलक—सानुवाद—जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है।

कश्मीरी लोकगीतों की परम्परा अति प्राचीन एवं विशाल है। ये विभिन्न रूपों में प्राप्य है। इन विभिन्न रूपों में से 'शुर्य-बा'थ' (बाल-गीत), 'रोव' (महिला-नृत्य-गान), 'कमिल्य-बाथ' (कृषक--गान), लडीशाह' (हास्य-व्यंग्य-गीत), 'छकरि-बा'थ' (शादी-ब्याह पर सवाद्य गाये जाने वाले गीत) तथा 'वनुवुन' (मंगल-गीत) प्रमुख हैं। निम्न पंक्तियों में कश्मीरी लोकगीतों के इन्हीं प्रमुख प्रकारों का संक्षिप्त परिचय कराया जा रहा है।

'शुर्य-बा'थ' अर्थात बालगीत कश्मीरी लोकगीतों में दो रूपों में पाये जाते हैं। इन के ये दो रूप हैं—१. मजुल्य-बा'थ (लोरी) तथा २. गिन्दन-बा'थ (अन्य बाल गीत)।

'मजुल्य-बा'थ' लोरियां हैं जो कश्मीरी माताएं अपने प्रिय शिशुओं को गोद में ले कर थपकियां देते हुए, हलराते हुए या सुलाते समय अपने विशेष अन्दाज़ में गातीं हैं। इन गीतों में प्रायः शिशु के चिरजीवी होने, जीवन में सफलता एवं समृद्धता पाने, पढ़ लिख कर ज्ञान प्राप्त करने तथा सुखी रहने की कामना की गई होती है। दूसरे प्रकार याने 'गिन्दन-बा'थ' (अन्य प्रकार के बालगीतों) का सम्बन्ध बच्चों के विभिन्न कश्मीरी खेलों, बच्चों के मनोरंजन एवं हंसाने से है। इन गीतों में कई ऐसे गीत भी हैं जिन का बिलकुल कुछ अर्थ नहीं निकलता। ऐसे गीतों में केवल शब्द चमत्कार ही प्रधान रहता है। इस प्रकार के गीत 'निरर्थक-गीत' (Nonsencical Rhymes) कहलाते हैं। उदाहरण के लिए इसी प्रकार के एक कश्मीरी बाल-गीत की निम्न पंक्तियां देखिये —

ई-चख वी-चख
दन्दा खी-चख
लंगा ला'ची
कांगुर कची
अथव गची लोरुम अ'न्जा
लितर मोरुम कोडा पान्डा
फेगो चलगो मार।

'गिन्दबा'थ' याने अन्य प्रकार के बाल-गीतों में ऐसे गीत भी सम्मिलित हैं जिन का उद्देश्य बच्चों को उन शब्दों का शुद्ध उच्चारण सिखाना है जिन के उच्चारण में बच्चे प्रायः गलती करते हैं। इन का उद्देश्य बच्चों की हकलाहट एवं तोतलापन दूर करना भी है। इस प्रकार के एक मिनी लोकगीत-का अवलोकन कीजिये :—

ब्रोर गव
रंगुर्य वान
रंगुर्य वोंगनस
ल्वट।

अन्य प्रकार के बाल-गीतों में से अधिकांश गीत कश्मीरी बच्चे कई विशेष कश्मीरी खेल, जैसे 'काठ शाले बम,' 'तुले ल्वंगुन,' 'गोर-माजि-गोरस' तथा 'हिकूट' आदि खेलते समय गाते हैं। आधुनिक खेलों के प्रचार से कश्मीरी बच्चों में उक्त खेलों की लोकप्रियता काफी घट रही है। अतः इस प्रकार के क्रीड़ा--गीत समाप्त प्राय से हो रहे हैं।

कश्मीरी लोकगीतों में 'रोव' अर्थात 'महिला-नृत्य-गान' का एक विशेष स्थान है। इस प्रकार के गीत गाते समय कश्मीरी महिलाएं (प्रायः तरुणियां) पंक्तिबद्ध होकर दो दलों में बट कर एक दूसरे की ओर मुंह किये खड़ी रहती दलों की महिलाएं अपनी दाहिनी भुजा अपने दायें ओर की महिला के कन्धे हैं। दोनों पर रखती हैं तथा बाईं भुजा बाईं ओर की महिला की कटि पर रख कर छोटे-छोटे लयात्मक कदम आगे-पीछे लेती हैं तथा शरीर के ऊपरी भागको, गीत की लय के अनुसार ही पद-संचालन करते समय, आगे पीछे करती हैं। क्रम से एक दल गीत के बोल द्रुत लय में गाता है और दूसरा दल उसी प्रकार टेक दुहराता है।

रोव-गीतों का विषय प्रायः यौवन की उमग, मायके-ससुराल का जीवन तथा प्रेम आदि होता है। अभिप्राय यह कि इस प्रकार के गीत महिला जीवन से ही अधिकतर सम्बन्धित होते हैं।

रोव-गीतों की रसीली गूंज अधिकतर-रमज़ान की शामों और ईद के दिनों कानों में अमृत घोलती है। शाम के समय जब इस प्रकार के गीतों की ध्वनि पवन के कोमल डैनों को पाती है तो एक समां बंध जाता है। ईद

के दिन गाये जाने वाले एक लोकप्रिय रोव-गीत के बोल हैं—

ईद आयि रसु रसु ईदगाह वसुवा'य
ईदगाह वसुवा'य ।.....

हौले हौले कदम बढ़ाती ईद सुहानी आई
सखी री ! ईदगाह जायें, सखी । री ईदगाह जायें ।

किसी युवती के ससुराल के कष्टपूर्ण जीवन से सम्बन्धित उद्‌गार एक रोव-गीत में यों व्यक्त हुए हैं :—

वागुच आ'सुस बबुरे था'जी
तावन जा'जीना'स.....

मैं बाग की नाजुक कलिका थी
हा ! भीषण ताप ने कुम्हलाया
मैं बाप की लाडली बिटिया थी
ससुराल ने मुझ को झुलसाया
भाग्य-लेख पर बस न चला
हा ! ताप भयंकर जला गया
मैं बाग की नाजुक कलिका थी
हा ! भीषण ताप ने कुम्हलाया ।

किसी प्रिय-प्रतीक्षारत ललना के उर के मचलते भाव इस प्रकार का रोव-गीत बन गये हैं—

.....करु प्यठुयारस प्रारानछसतय प्रारानछसतय.....

.....बाट जोहती उनकी मैं उत्सुक कब से
पान कराती सुरा-चषक, यदि वे आते
और लुटाती सरवस उनके चरण तले
नीड़ रचा बुलबुल ने सुन्दर झुरमुट में ।

'कमिल्य-बा'थ' अर्थात् कृषक-गान वे लोकगीत हैं जो किसान खेतों में कड़ा परिश्रम करते हुए गाते हैं। जुते हुए खेत के डले तोड़ते समय, धान की पनीरी रोपते समय तथा निराई आदि करते समय किसान तल्लीन हो समवेत स्वर में इस प्रकार के गीत गाते हैं। खेत में काम करते समय किसानों के दल में से एक किसान ऊंचे स्वर में गीत के बोल गाता है तथा अन्य किसान गीत

की टेक दुहराते हैं। इस प्रकार के गीत के गाने में तन्मय हुए कश्मीरी किसानों का काम देखते ही बनता है। इस समय न इन्हें तेज धूप की परवाह होती है, न धान के खेत में विद्यमान नाना प्रकार के कीटों के काटने की। बस इन के कण्ठ से गीत के सुमधुर बोल फूटते जाते हैं और सधे हाथ यन्त्रवत् कार्य करते रहते हैं। कृषक-गान कश्मीरी कृषक ललनाएं भी गाती हैं पर शर्त यह है कि खेत में केवल महिलाएं ही काम कर रही हों।

कृषक-गानों के विषय अन्य प्रकार के कश्मीरी लोकगीतों की तुलना में सीमित हैं। इन के विषय प्रायः प्रेम अथवा भक्ति आदि ही होते हैं।

धान की पनीरी रोपते समय किसान की अन्तरसाध इन लयात्मक शब्दों का रूप धारण करती है :

बजिनावि वरकथ थलहय रुवुनावस.....

उपज-वृद्धि हो फसलें सरसें
धान पनीरी रोपवाऊं।

किसान की सम्पत्ति फसलें ही तो हैं। कश्मीरियों का मुख्य-खाद्य चावल है — धान ही कश्मीरी किसान के अथक श्रम का फल है अतः वह इसे इतना समादर देना चाहता है कि :—

अटाला बनाने समधी बुलाऊं
ताज़े दूध से इसे सिंचाऊं
धान-पनीरी रोपवाऊं।

'लद्दीशाह' यानि हास्य-व्यंग्य के लोकगीत एक खास व्यक्ति अपने विशेष अन्दाज तथा लहजे में गाता है। इस गायक को भी लडीशाह[1] ही कहते हैं। 'लडीशाह' एक ही व्यक्ति एक विशेष वाद्य बजाते हुए गाता है। इस वाद्य को कश्मीरी में 'दुकरु' कहते हैं। लगभग पौन मीटर लंबी लोहे की छड़ में बीस पच्चीस (छड़ की मोटाई से अधिक गोलाई वाले) लोहे के छल्ले लगाये जाते हैं। छड़ दोनों ओर से इस प्रकार मुड़ा होता है कि छल्ले बाहर न आ सकें। लडीशाह इन्हीं छल्लों को अपने दाहिने हाथ से संचालित कर ध्वनि उत्पन्न करके उसी लय के साथ-साथ 'लडीशाह' गाता जाता है।

कश्मीरी लोकगीतों में 'लडीशाह' आंजकल भी बहुत ही लोकप्रिय है।

---

1 लडीशाह को कुछ सीमा तक मीरासी-सा ही समझा जा सकता है।

शहर, कस्बे या गांव—किसी भी स्थान पर आजकल भी जब कोई लडीशाह अपना 'दुकरु' ले कर गाता है तो अनेक लोग उसके इर्द-गिर्द एकत्र हो कर बड़ी रुचि के साथ उसे सुनते हैं। कश्मीरी लोकगीतों के अन्य प्रकारों के साथ 'लडीशाह' की तुलना करने से ऐसा प्रतीत होता है कि कश्मीरी लोकगीतों का यह प्रकार काफी समय तक जिन्दा रहेगा।

'लडीशाह' में लडीशाह द्वारा विनोदात्मक लहजे में किसी दैवी कोप, दुर्घटना, देश अथवा समाज को प्रभावित करने वाली कोई विशेष घटना आदि प्रस्तुत की जाती है। प्रस्तुतीकरण में गहरे व्यंग्य एवं हास्य के साथ-साथ ऐतिहासिक-सत्य भी सन्निहित रहता है। मुझे यह बात तथ्यपूर्ण लगती है कि कश्मीर के इतिहास के अध्ययन के साथ-साथ यदि लोकगीतों की इस विधा का भी समुचित अध्ययन किया जाए तो उन घटनाओं पर काफी प्रकाश पड़ सकता है जो अपरिचय के अन्धियारे मे खो गई हैं।

देखिये 'नूनुद्राग' (लवणाकाल) नामक 'लडीशाह' की निम्न पंक्तियां कितनी सटीक एव कटु व्यंग्य लिए हुए हैं :

.....नूनु जहाज़ा अख़ मनोवुख.....

एक विमान नमक से भरकर जब मंगवाया
और हवाई अड्डे पर उस को बैठाया
हमें भगाया नमक ले गये हाकिम सारे
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये।

'छकरि-बा'थ' अर्थात् खुशी के मौकों, मेलों तथा त्यौहारों पर सवाद्य गाये जाने वाले लोकगीत कश्मीरी लोकगीतों का मधुरतम एवं जीवन्त प्रकार हैं। इस प्रकार के गीत गाते समय जिन विशेष कश्मीरी वाद्यों का प्रयोग किया जाता है वे हैं—'तुम्बखना'र,' मिट्टी की पाइपनुमा ढोलकी जिस की लम्बाई लगभग दो फुट होती है तथा जिस के एक सिरे का व्यास दूसरे सिरे के व्यास की अपेक्षा अधिक होता है और इसी सिरे पर चमड़ा मढ़ा रहता है। घड़ा तथा सारंगी नामक वाद्य गाने वालों में से ही कई व्यक्ति बजाते हैं। आजकल इन वाद्यों में हार्मोनियम, रबाब तथा चिमटे आदि का समावेश भी हो गया है।

छकरि-गीतों का रूप वृन्दगान जैसा है। श्रीनगर के एक प्रमुख संगीतकार

से बातचीत के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि इन गीतों पर आजकल उत्तरी भारत के संगीत का काफी प्रभाव पड़ता जा रहा है। रेडियो कश्मीर, श्रीनगर से छकरि गीत गाने वाले कई दल तो गाते समय मध्य एशिया के लोक-संगीत की नकल भी करते हैं। फिल्मी धुनों का प्रभाव भी इन गीतों के गायन पर बहुत पड़ता जा रहा है। यदि यही हाल रहा तो इन गीतों का शुद्ध लोक-रूप धीरे-धीरे मिटता रहेगा।

छकरि गीतों का विषय प्रायः नेह-प्यार, मानसिक उल्लास, ससुराल के जुल्म, मायके का प्यार, शादी-ब्याह से सम्बन्धित विभिन्न रीतियां, भक्ति आदि तथा अन्य हल्की-फुल्की बातें होती हैं। एक छकरि गीत के माध्यम से एक कश्मीरी वधू कहती है :

कुसुम ह्यकि हशिहुन्द चा'लिथ तुलोलो.....

कैसे मैं सासु को सहन करूंगी
वह तो जलते चूल्हे में फैंकेगी
सहन करूंगी मैं तो जननी का ही
अपने तन से वह उतार कर देगी।

परमात्मा के आगे प्रनत हो एक महिला प्रार्थना करती है—

यिथपा'ठय टोठचोख पोंपुरुचिललो.....

जैसे अनुग्रह किया लला पर पांपुर की
वैसे ही अनुग्रह कीजे प्रभु ! मुझ पर भी !!

'वनुवुन' याने मंगल-गीत यज्ञोपवीत संस्कार, खुतने तथा विवाह आदि के अवसरों पर केवल महिलाओं द्वारा ही गाये जाते हैं। जिस प्रकार 'रोव-गीत' कश्मीरी महिलाओं की बपौती है उसी प्रकार 'वनुवुन' भी इन्ही का गायन है। कश्मीरी लोकगीतों के अन्य प्रकारों की अपेक्षा यह प्रकार काफी सम्पन्न एवं वैविध्यपूर्ण है। इस प्रकार के गान बिना वाद्यों के एक विशेष लहजे एवं स्वर-ताल में सामूहिक रूप से गाये जाते हैं। कश्मीरी पण्डितों एवं कश्मीरी मुसलमानों के 'वनुवुन' में काफी समानता है; पर फिर भी प्रधान वैवाहिक रीतियों आदि की दृष्टि से, भाषा तथा गायन के ढंग की दृष्टि से इन दोनों के 'वनुवुन' में अन्तर है। जहां कश्मीरी पण्डितों के वनुवुन में संस्कृत शब्दावली की बहुलता है वहां कश्मीरी मुसलमानों के वनुवुन

में फारसी के अनेक शब्द दृष्टिगोचर होते हैं। निम्न उदाहरण इस सन्दर्भ में पर्याप्त होगा—

(क) आ'ही कर वारुवारय लगुनस
खस कूर्य अगुनस प्रदिख्यन कर।
(कश्मीरी पण्डितों के 'वनुवुन' से)

(ख) शीरीं स्वखुनो तोतुगय का'ली
ख्यन्य छो बादाम खा'ली ये।
(कश्मीरी मुसलमानों के 'वनुवुन' से)

जहां कश्मीरी पण्डितों के 'वनुवुन' में अगुन (अग्नि) तथा 'प्रदिख्यन' (प्रदक्षिण) जैसे शुद्ध संस्कृत शब्द हैं वहां कश्मीरी मुसलमानों के 'वनुवुन' में 'शीरींस्वखुन' जैसे फारसी के विशुद्ध शब्द विद्यमान हैं। कश्मीर के विभिन्न क्षेत्रों में मुसलमानों के 'वनुवुन' का अध्ययन करने के पश्चात् स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि इस 'वनुवुन' में क्षेत्रीयता के आधार पर भिन्नता है; पर कश्मीरी पण्डितों के 'वनुवुन' में यह क्षेत्रीय भिन्नता नहीं पाई जाती। मुसलमानों का 'वनुवुन' जहां समय की गति के साथ गतिशील रहा है वहां कश्मीरी पण्डितों का 'वनुवुन' स्थायित्व का शिकार हुआ है। ऐसा क्यों है ? इस प्रश्न का उत्तर बहुत लम्बा है और यहां इस विवाद को छेड़ना संगत भी नहीं लगता।

'वनुवुन' कश्मीरियों के सामाजिक जीवन का दर्पण है। विभिन्न युगों में हमारे सामाजिक-जीवन की क्या स्थिति रही है उस की स्पष्टतम छाया हमें इस दर्पण में देखने को मिलती है। विवाह, यज्ञोपवीत संस्कार तथा खुतने आदि की विभिन्न रीतियों से सम्बन्धित बातों के अतिरिक्त 'वनुवुन' में दूल्हे-दुल्हिन के गुणों एवं सौंदर्य तथा वर-वधू पक्ष की महानता का बखान भी किया जाता है। कहीं कहीं 'वनुवुन' में हास्य-व्यग्य का पुट तथा जमाने की शिकायत भी मिलती है। महिलाएं 'वनुवुन' द्वारा ही दूल्हे एवं दुल्हिन को सीख भी देती हैं।

'वनुवुन' का मर्मस्पर्शी अंग उस समय गाया जाता है जब लड़की की विदाई होती है। विदाई के समय गाये जाने वाले गीत की हर पंक्ति इतनी करुण एवं सुतावियोग-जन्य तड़प से ओतप्रोत होती है कि हर सहृदय-श्रोता का मन भर आता है। बेचारी मां जिसने तन, मन, धन एवं अमूल्य वात्सल्य दे बिटिया को पाला-पोसा होता है, उसके पति-ग्रह जाने पर बेसहारा-सी हो कर

तड़प कर कह उठती है :

चौदह बरस रखा अपने घर दे दे कर उत्कोच तुम्हें
चली गई मेहमान-सी बिटिया ! छोड़ अकेला आज हमें ।

वधू पक्ष की महिलाएं वर से प्रार्थना करती हैं कि —

अंटी का घर इस के सम्मुख दिल का राज़ बता देता
तुम्हें खुदा की कसम कि इस की सदा नेह से सुध लेना ।

●

कश्मीरी लोकगीतों के उक्त प्रमुख प्रकारों के अतिरिक्त कई अन्य प्रकार के लोकगीत जैसे 'बुर्जुम्यचि हुंद बा'थ' याने नामकरण संस्कार के गीत, 'मनजूम प्रचु' याने पद्यमय पहेलियां तथा 'वान' अर्थात् शोक-गीत आदि भी पाये जाते हैं । प्रस्तुत संकलन में कश्मीरी लोकगीतों के इन प्रकारों को इस कारण स्थान नहीं दिया गया है कि इस प्रकार के गीतों में बेहद आंचलिकता है तथा हिन्दी अनुवाद में इन का सौंदर्य नष्ट होने का डर बराबर मेरे मस्तिष्क में बना रहा । साथ ही, स्थानाभाव भी उक्त प्रकार के गीतों को प्रस्तुत संग्रह में सम्मिलित न करने के लिए कुछ सीमा तक उत्तरदाई रहा है ।

●

मैं बन्धुवर श्री जितेन्द्र शर्मा, उप-सचिव तथा लघु-भ्राता चिरंजीव रमेश मेहता, सम्पादक हिन्दी, ललितकला, संस्कृति तथा साहित्य अकादमी, जम्मू-कश्मीर का हृदय से आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक की सामग्री एकत्र करने में मेरी सहायता की तथा समय समय पर मुझे पुस्तक को पूर्ण करने के लिए प्रेरणा भी दी । अकादमी के अधिकारियों एवं इस की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्यों का मैं कृतज्ञ हूं ही जिन्होंने मुझे प्रस्तुत पुस्तक का सम्पादन एवं अनुवाद कार्य सौंप कर गौरवान्वित किया । अन्त में मैं श्रीमती शान्ता शर्मा तथा कुमारी नीरजा जी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने पुस्तक में सम्मिलित गीतों के चयन एवं पाण्डुलिपि के लेखन में पूरी पूरी सहायता की ।

जय वीणा-पाणि !!

—पृथ्वीनाथ मधुप

लोरियाँ

मां बलिहारी

तुझे झुलाऊं मां बलिहारी !
बुन्दे गढ़ाऊं मां बलिहारी !
तुझे झुलाऊं मां बलिहारी !
प्रात के सूरज ! तुझे रिझाऊं
मां बलिहारी !
रत्नों - रजत - गहने बनवाऊं
मां बलिहारी !
तेरे लिए मधु - खीर बनाऊं
मां बलिहारी !
तुझे झुलाऊं मां बलिहारी !

तोहे हलराऊं, दुलराऊं

[मेरी आंखों के तारे !]
तुम्हारे लिए मैं पालना खरीद लाई हूं
इसी में हलराऊंगी तुझे
तुम्हारे लिए दुकान से पोथी मोल लाई हूं
तुम्हें हलराऊंगी ! दुलराऊंगी !!

तुम्हारे लिए अनन्तनाग से रोगन वाली तख्ती खरीद लाई हूं
(अब) सोने का कलम बना दूंगी
तुम्हारे (लिखे) अक्षर मोती (सरीखे सुन्दर) हैं
तुम्हें हलराऊंगी ! दुलराऊंगी !!

तुम्हारे लिए बिजबिहारा से रंगीन पादुका खरीद लाई हूं
इस में रेशम के धागों का पट्टा लगा दूंगी
तुम इसे कीचड़ और बारिश के पानी में सान देना
(मैं तनिक भी नाराज़ नहीं होऊंगी)
तुम्हें हलराऊंगी ! दुलराऊंगी !!

●

दुग्ध-पोष्य ! मैं बलि बलि जाऊं

पुआल का खेप लाने गई है तेरी महतारी
दुग्ध-पोष्य ! मैं बलि बलि जाऊंगी
हंडिया भर छाछ लेने गई है वह पड़ौसी के घर
दुग्ध-पोष्य ! मैं बलि बलि जाऊंगी
पुआल का खेप लाने गई है तेरी महतारी
दुग्ध-पोष्य ! मैं बलि बलि जाऊंगी ।

पंजाब की ओर गया है तेरा पिता शरद्काल में
तुम्हारे लिए बहुमूल्य कपड़े का थान लायेगा
आधा रख लूंगी और आधे का जोड़ा सिलाऊंगी
दुग्ध-पोष्य ! मैं बलि बलि जाऊंगी
पुआल का खेप लाने गई है तेरी महतारी
दुग्ध-पोष्य ! मैं बलि बलि जाऊंगी ।

सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे

सखीने सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
ओ रे ! दास ज्वाला देवी के
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
उसी की भक्ति कर निष्ठा से
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
चाकर राजा भवानी के
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
सुखी रहोगे लक्ष्मी की दया से
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
सुमुख ! बलवान ग्रहों वाले !
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
बहकाया है तुम्हें किस ने ?
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
निकलोगे कमाने बुलबुल रे !
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
ब्याहूंगी बिजली-सी दुलहनिया से
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे
सुलाऊंगी तुम्हें थपकियां दे दे।

●

कलि बाग की

कली बाग की, गोरी गोरी
बलि बलि जाऊं बिटिया मोरी
पास हमारे आई हो री
बलि बलि जाऊं बिटिया मोरी।

जनक तुम्हारा सींच रहा है
कितने चमन गुलाबों वाले
इन्हीं गुलाबों से संवार दूं
तेरे कच काले घुंघराले
अर्पण होऊं नाजुक छोरी
बलि बलि जाऊं बिटिया मोरी।

सुमुखि तुम्हारे ही कारण तो
जननी लाई पात्र इत्र के
हंसिनि-सी ग्रीवा पर तेरी
मल दूंगी हौले हौले से
जिये बहन-भाई की जोरी
बलि बलि जाऊं बिटिया मोरी।

दो दो खेत निराये मैंने
तेरी ही कांक्षा से लोनी
खिली समय से पहले तो क्या
हो कर रहती ही है होनी
अप्सरि ! तुम्हें सुनाऊं लोरी
बलि बलि जाऊं बिटिया मोरी।

सुन्दर कोमल मेरी रानी

रानी ! रानी !! हलराऊं मैं, हलराऊं मैं
सुन्दर कोमल मेरी रानी।
मैना मेरी आभा वाली
सुन्दर कोमल मेरी रानी।
मिलजुल पोषण पाने वाली
सुन्दर कोमल मेरी रानी।
बर्फ सरीखी गोरी गोरी
सुन्दर कोमल मेरी रानी।
बिटिया हमारी भाग्यशालिनी
सुन्दर कोमल मेरी रानी।
धूपधुली बरखा फुहार - सी
सुन्दर कोमल मेरी रानी।
मनहर द्युति कुन्दन-कंचन की
सुन्दर कोमल मेरी रानी।
रानी ! रानी !! हलराऊं मैं, हलराऊं मैं
सुन्दर कोमल मेरी रानी।

गोदी में लूंगी

हरलराऊंगी हृदय - हर्ष रे ।
गोदी में लूंगी
हलराऊं दुलराउं तोहे
दूध, अन्न से पोषित कर दूं
गोदी में लूंगी
हौले से स्तन-पान करा दूं
गोदी में लूंगी
छिपा रखूं किस को दिखला दूं ?
गोदी में लूंगी
एला - मिश्री तुम्हें खिला दूं
गोदी में लूंगी
तोतली बातें बुलवा दूंगी
गोदी में लूंगी

महिला नृत्य-गान

ਸਾਹਿਤ ਸਭਾ ਲਿਬਰੀ

महीना भर रह चला गया

यहीं था रोज़ों का शुचि-मास
महीना भर रह चल गया ।।२।।
रहीं प्रतीक्षारत ही हम
महीना भर रह चला गया ।।२।।
यहीं था रोज़ों का शुचि मास
महीना भर रह चला गया
गह लूं मैं इस का दामन
महीना भर रह चला गया
अर्पित कर दूं तन - जीवन
महीना भर रह चला गया
यहीं था रोज़ों का शुचि मास
महीना भर रह चला गया
महीना भर रह चला गया ।

आई ईद सुहानी

हौले हौले कदम बढ़ाती ईद सुहानी आई
सखी री ! ईदगाह जायें सखी री ! ईदगाह जायें ।
जिस ओर नबी साहब हैं आओ उसी ओर से जायें
सखी री ! ईदगाह जायें ।
भक्तिभाव के गीत अलापते वापस आ जायें
सखी री ! ईदगाह जाये ।
राज रहे दस्तगीर जहां से उसी ओर से जायें
सखी री ! ईदगाह जायें ।
करके अदा निमाज़ सुनो री ! वापस आ जायें
सखी री ! ईदगाह जायें ।
कुछ काल साधना-लीन रहें फिर लौट के आ जायें
सखी री ! ईदगाह जायें ।
आते आते केवल पावन कलमा ही गायें
सखी री ! ईदगाह जायें ।
हौले हौले कदम बढ़ाती ईद सुहानी आई
सखी री ! ईदगाह जायें सखी री ईदगाह जायें ।

●

पीर के आस्ताने पर

रोव[1] करें हम आओ पीर के आस्ताने पर
रोव करें हम आओ पीर के आस्ताने पर
आओ रसिको ! होओ आज प्रमन तर
रोव करें हम आओ पीर के आस्ताने पर
नृप बम्बुर[2] ने खूब निवाही रीत प्रीत की
लोलरि[2] पर सब कुछ अपना कर दिया निछावर
रोव करें हम आओ पीर के आस्ताने पर
इश्क निबाहा सुन लो लैला के आशिक ने
नजदावन को ही कर डाला निज घर
रोव करें हम आओ पीर के आस्ताने पर
फरहाद दिवाना आली ! प्रेयसि के कारण
वर गया स्वयं पंचत्व—काल का श्वरतर शर
रोव करें हम आओ पीर के आस्ताने पर।

●

1 गान तथा एक विशेष प्रकार के नृत्य का संयुक्त रूप जो प्रायः महिलाओं की बपौती समझा जाता है।

2 'राजतरंगिनी' के अनुसार बम्बुर कश्मीर का एक राजा है जिस ने लोलरि नामक एक सुन्दर अंगना के प्रेम में अपना राज-पाट तक त्याग दिया।

रे गुलाब ओ

कहां खिले हो
रे गुलाब ओ !
मेंड़ पे विकसे
रे गुलाब ओ !
शिर से लगा लूं
रे गुलाब ओ !
लट में सजा दूं
रे गुलाब ओ !
तुम महान हो
रे गुलाब ओ !
ललचा गये हो
रे गुलाब ओ !
राह में खोजूं
रे गुलाब ओ !
पीछे भागूं
रे गुलाब ओ !
कहां खिले हो
रे गुलाब ओ !

मधुप !

चलो बाग़ की ओर मधुप तुम चलो बाग़ की ओर
चलो बाग़ की ओर मधुप तुम चलो बाग़ की ओर
वाद्य बजा देगी मृदु नर्गिस बैठ सजीले ठौर
चलो बाग़ की ओर मधुप तुम चलो बाग़ की ओर
रात कलूटी बीती आयी मादक मनहर भोर
चलो बाग़ की ओर मधुप तुम चलो बाग़ की ओर
बाट जोहती अप्सरि तेरी लिये चषक, सिरमौर !
चलो बाग़ की ओर मधुप तुम चलो बाग़ की ओर
लाये तुम चुन्नी लाहोरी ओ मेरे चितचोर !
चलो बाग़ की ओर मधुप तुम चलो बाग़ की ओर
पहना, हिला हेम का बुन्दा उर में उठी हिलोर
चलो बाग़ की ओर मधुप तुम चलो बाग़ की ओर

ताप ने कुम्हलाया

मैं बाग़ की नाज़ुक कलिका थी
हा ! भीषण ताप ने कुम्हलाया
मैं बाप की लाडली बिटिया थी
ससुराल ने मुझ को झुलसाया
भाग्य-लेख पर बस न चला
हा ! ताप भयंकर जला गया
मैं बाग़ की नाज़ुक कलिका थी
हा ! भीषण ताप ने कुम्हलाया ।

नीड़ रचा बुलबुल ने

नीड़ रचा बुलबुल ने सुन्दर झुरमुट में
चले सैर करने डल झील पिया मेरे
रूमाल हाथ लें पोंछूं श्रम-सीकर उनके
स्वर्ण-पात्र में जल धर दूं उनके आगे
मस्त रहे बेदर्दी पियवा गैरों में
बाट जोहती उत्सुक मैं उन की कब से
पान कराती सुरा चषक से यदि आते
और लुटाती सरवस उनके चरण तले
नीड़ रचा बुलबुल ने सुन्दर झुरमुट में

न आयेंगे क्या वे कश्मीर

गये पंजाब युवा मृदुतर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर

गठीले युवक बहुत सुन्दर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर
पंख कटे-से ज्यों नभचर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर
गये पंजाब युवा मृदुतर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर

कुसुम कोमल और कम उमर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर
रति-पति से मोहक मनहर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर
गये पंजाब युवा मृदुतर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर
गठीले युवक बहुत सुन्दर
न आयेंगे क्या वे कश्मीर ।

●

पियरवा रे !

मनहर मोहक छवि वाले
प्राण समर्पूं पियरवा रे !
दूर गांव में क्यों ब्याहा
हे सम्पन्न जनक मेरे !
प्राण समर्पूं पियरवा रे !
धन - कुबेर भाई मेरे
मेरे हित को नहीं बढ़े
प्राण समर्पूं पियरवा रे !
क्या बीती मुझ पर कहती
सांझ ढले मामा ! आते
प्राण समर्पूं पियरवा रे !
भाग्य ! मुझे बेकार किया
मुरझ गई ताने सुनते
प्राण समर्पूं पियरवा रे !
मनहर मोहक छवि वाले
प्राण समर्पूं पियरवा रे !

32

प्रियतम मेरे !

सुनो ध्यान से तुम्हें कहूं निज करुण-कथा प्रियतम मेरे !
गान मांगलिक ऊषा बेला गाती पक्षिनि तेरे लिये
आओ उपवन में गिलास[1] के प्राण पिया साजनवा रे !
इस उद्यान से आओ बाहर मधुर फलों की डलिया ले
जीमने बैठो ज्योति-पुंज से भरे सुहाने छज्जे पे
तुम्हें खोजने निकलूं प्यारे मैं तो बरखा झड़ियों में
अपना तन मन करूं समर्पित मेरे धन ! मैं मात्र तुझे
अपने प्रण से नहीं डिगूंगी मैं इन सांसों के रहते
बर्फ-पिण्ड हूं मैं अहरबल[2] का सुनो नाथ मम प्राणों के
गल जाऊंगी तिल-तिल करके भीषण ग्रीष्म गर्मी से

---

1 एक फल जिसे अंग्रेजी में चेरी CHERRY कहते हैं ।

2 कश्मीर के एक मनोरम स्थान का नाम । अहरबल का जल-प्रपात बहुत प्रसिद्ध है ।

रोव[1]

पच्ची करें हम मोतियों के हार में
चांदनी में रोव करें

बाग़ में भैया के जायें
है वह कुसुमों से भरा
वन्धु-नेह से उर भरें
चान्दनी में रोव करें

तात के उद्यान जायें
है वहां मखमल बिछा
मधुर गीतों को वरें
चान्दनी में रोव करें

नाव में डल झील जायें
देख लें बाग़े-निशात
शा'र[2] में प्याले भरें
चान्दनी में रोव करें।

1 गान तथा एक विशेष प्रकार के नृत्य का संयुक्त रूप। रोव प्रायः महिलायें ही करती हैं।

2 शा'र : शालिमार का संक्षिप्त रूप।

सेंध लगा कर चला गया

गिलिटूर[1] सरिस मेरा मधुमय यौवन विकसा
सेंध लगा कर चला गया पटु सेंधिया-सा

चमन एक था कलियों का यौवन मेरा
ओलों से भीषण घातक हा दुर्भाग्य बना
जब याद उभरती विह्वल हो जाता हियरा
सेंध लगा कर चला गया पटु सेंधिया-सा।

यौवन मेरा था सोने का आभामय बुन्दा
लोनी जिस की हर अदा मनोहर थिरकन थी
दो दिन गोदी में लेकर हुलरा-दुलरा
सेंध लगा कर चला गया पटु सेंधिया-सा।

यौवन था तन्दूर तेज़ लपटों वाला
देता जो मात सहज ही हर सौदामिनि को
ताप-शून्य हो इस में केवल क्षार बचा
सेंध लगा कर चला गया पटु सेंधिया-सा।

मधुपायी मधुप-सांवला मेरा यौवन था
हो प्रमन लता कलियों पर था जो मंडराता
कहां गई वह मत्त दशा, औ' वह आभा
सेंध लगा कर चला गया पटु सेंधिया-सा।

---

1 पीले रंग का एक पुष्प जो फरवरी-मार्च के महीनों में कश्मीर में खिलता है।

हिय-पादप[1] को मैंने गोड़ा

जाते ही उद्यान सुनो री
हिय-पादप को गोड़ा मैंने
और गई फिर तीर नदी के
जहां कि अपने जनक मिल गये
मुझे ले गये घर वे अपने
फूल बिछाये हर पौड़ी पे
बैठाया फिर निज कमरे में
नर्म गुदगुदा उच्चासन दे
तोता मुखर रखा दायें से
और शमा दिपती बायें से
पावन श्री कुरआन सामने
दिल की बात कही धीमे से
उनसे मैंने
आंसू मोटे मम आंखों से
लगे टपकने
सहन करो सब बिटिया मेरी कहा उन्होंने
जल का घट लाकर नदिया से
सास-ससुर के पद पखारने तुम्हें चाहियें
और यह भी कहा उन्होंने
जाओ बिटिया तुम घर अपने
नहीं चाहिये रहना मैके
सब सहते रहना पति-गृह में
जाते ही उद्यान सुनो री !
हिय-पादप को गोड़ा मैंने ।

---

1 हिय-पादप=[हिय : कश्मीरी नाम]—एक वृक्ष जिस में छोटे-छोटे पीले सुगन्धित पुष्प लगते हैं ।

कृषक-गान

गीत-काव्य

ढेले तोड़ने का गान

बाग़ में ही ले लिया निज थान मेरे नागिराय[1]
बाग़ में ही ले लिया निजथान मेरे नागिराय
हीमाल सब कुछ तव चरण पर वार दूंगी दरस पाय
बाग़ में ही ले लिया निज थान मेरे नागिराय
मैं न जानी थी कि बेपरवाह हो तुम पीव ! हाय
बाग़ में ही ले लिया निज थान मेरे नागिराय
कौन सौतिन रीत रे तुम को गई ऐसी सिखाय
बाग़ में ही ले लिया निज थान मेरे नागिराय
कौन ऐसा विरह से जिस की न झुलसी हाय ! काय
आज मैं लैला मेरे मजनूं पड़ी हूं निर उपाय
बाग़ में ही ले लिया निज थान मेरे नागिराय
प्राण रे ! सिर मौर ! बस चिन्ता तिहारी जाय खाय
बाग़ में ही ले लिया निज थान मेरे नागिराय

1 एक कश्मीरी लोक-कथा के अनुसार नाग्यराय और हीमाल प्रेमी-प्रेमिका थे ।

धान-पनीरी रोपने का गान

उपज-वृद्धि हो फसलें सरसें
धान-पनीरी रोपवाऊं
अटाला बनाने समधी बुलाऊं
धान-पनीरी रोपवाऊं
साध है धान के पौधे लगाऊं
धान-पनीरी रोपवाऊं
बेद-छांह में स्वेद ठंडाऊं
धान-पनीरी रोपवाऊं
उत्तम किस्में ही मंगवाऊं
धान-पनीरी रोपवाऊं
ताज़े दूध से इसे सिंचाऊं
धान-पनीरी रोपवाऊं

41

धान के अंकुर रोपने का गान[1]

तुम्हें पुकार रही हूं कब से
फरहाद ! मैं शीरीं आई हूं
तुम्हें गुहार रही मैं कब से
मजनूं ! नेह के हार लिये
तुम्हें खोज रही है कब से
श्याम-भ्रमर नर्गिस तेरी
भैया ! आ मैं बाट जोहती
पथ पे कितने दीप लिये
तुम्हें पुकार रही हूं कब से

●

1 कई खेतों में धान की पनीरी न रोप कर धान के बीज ही ऐसे बोये जाते हैं कि वे उचित दूरी पर अंकुरित हों। धान के अंकुरित होने पर खेत में कई जगह धान के अंकुर घने होते हैं। कृषक इन घनी जगहों से धान के अंकुर निकाल कर खेत की उन जगहों में रोपते हैं जहां अंकुर में काफी दूरी होती है। उखाड़ने और रोपने का यह कार्य करते समय किसान महिलायें उक्त गीत गाती हैं।

निराई का गीत (१)

कैसे भूलूं नाम तुम्हारा—
नुन्द ऋषि[1] तेरे नाम के सदक़े
झालर इस गुदड़ी का सजा लूं
नुन्द ऋषि तेरे नाम के सदक़े
प्रेमांसू से देहली धो लूं
नुन्द ऋषि तेरे नाम के सदक़े
तव स्थान पे मन्नत मानूं
नुन्द ऋषि तेरे नाम के सदक़े
कैसे भूलूं नाम तुम्हारा—
नुन्द ऋषि तेरे नाम के सदक़े

●

1 नुन्द ऋषि कश्मीर के एक सुप्रसिद्ध मुसलमान सन्त एवं कवि हुए हैं। कश्मीर के हिन्दू एवं मुसलमान दोनों इन्हें समान रूप से आदर देते हैं।

निराई का गीत (२)

मन हुआ कि उपवन में विचरूं
हौले से मधु माधव आया।

नत हो विनय किया चिनार ने
प्रभु ! मुझ में क्यों फल न लगे।
अखिल धरा को कल चिनार यह
देता निज शीतल छाया।
हौले से माधव आया ॥

चेर[1] ने विनय किया कर्ता से
प्रथम फली चेर[2] नाम पड़ा।
समय निराई के मधु फल यह—
कृषकों को कितना भाया।
हौले से माधव आया ॥

ईश से सफ़ेदे ने बिनती की
नाथ मुझे फल क्यों न दिये
लोग चिढ़ाते, मुझे खेद है—
क्यों यह लम्बा तन पाया।
हौले से माधव आया ॥

●

1 चेर (कश्मीरी शब्द) खोबानी का पेड़।
2 चेर शब्द के दो अर्थ हैं— खोबानी और देर।
यमक एवं श्लेष बना रहे इस कारण इस कश्मीरी शब्द को ज्यों का त्यों रहने दिया गया है।

हास्य-व्यंग्य के गीत

लवणाकाल

सुनिये विनय नबी ! हमरा उद्धार कीजिये
नमक न मिलने से कितने ही जन विकल हो गये

नमक-मूल्य आकाश छू गया और न मिलता
खा-पी कर भी पेट न भरता स्वाद न आता
सचमुच है हर व्यंजन-व्यंजन मात्र नमक से
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

अपने कारण सब बनियों ने नमक छिपाया
खाने वालों को ही भोजन खाने आया
पाया इसको हमने तिल भर एक स्वर्ण-मुद्रा दे
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

अहमद कहने लगा पिता से—सुनो पिता जी
भरा हुआ है पेट में जैसे केवल पानी
टांगें हैं बलहीन नहीं है कुछ दम इन में
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

हुए प्रवृत्त जब घृणित कर्म में पाकिस्तानी
छू मन्तर हो गया नमक कश्मीर धरनि से
लुप्त हो गया हुआ कि इस को टोना जैसे
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

मुद्दत बाद दिखा जनता को जब यह सैंधव
दर्शन पाकर सभी कि जैसे धन्य हो गये
नव उमंग औ' हर्ष छा गया मन में जन के
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

नमक समुद्री काश्मीर में जब मंगवाया
कमेटियों के सरपंचों से ही बिकबाया
भरे हुए हैं आमाशय लोगों के जल से
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

चोरी की लत पड़ी सभी को, गज़ब हो गया
इक नारी के आंचल से ही लवण खो गया
नहीं लिया है मैंने ऐसा कहा अन्य ने
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

एक विमान नमक से भर कर जब मंगवाया
और हवाई अड्डे पर उस को बैठाया
हमें भगाया नमक ले गये हाकिम सारे
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

बारामुल्ला में थे रहते एक नमक - व्यापारी
खर्ची अन्धाधुन्ध उन्होंने अपनी दौलत सारी
रहने लगे शान से अपनी शानदार कोठी में
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

नमक बेचने वालों ने लो पैसे खूब कमाये
गृहणी पिसती गई बिचारी के दृग भर भर आये
भण्डारों में नमक भरा है, बिकता है चोरी से
नमक न मिलने से कितने जन विकल हो गये ।।

जाड़ा

पहले प्रभु की ही है इच्छा
इस साल का जाड़ा कठिन पड़ा !
बन्द करो दरवाज़ा बोला
भाई यह भाई से
लघुशंका कमरे में कर लें
जाओ मत आंगन में !
यह कैसा अन्याय रे कर्ता !
इस साल का जाड़ा कठिन पड़ा !!
कंडी के गांवों ने ही तो—
अधिक कठिनता भोगी
कमरों में ही पड़े रहे—
थे वे सब जैसे रोगी
मल त्यागा देहली पर ही जा !
इस साल का जाड़ा कठिन पड़ा !!
बकरवालों पर ही सब से—
ज़्यादा संकट आया
सांझ ढले कोई बेचारा
बाहर ना जा पाया !
गायब चारा हाय हो गया !
इस साल का जाड़ा कठिन पड़ा !!

●

विवाह-गीत

ਨੀ-ਤਾਲਬੀ

वारूं तुम पर हे पीव मेरे अपना जीवन

अपना जीवन वारूं तुम पर हे पीव मेरे
वारूं तुम पर हे पीव मेरे अपना जीवन
पिता प्रमुख जब होता मैके का
लाड़ बहुत - सा पाती है बिटिया
हों वर्ष अनन्त पिता जी जीवन के तेरे
अपना जीवन वारूं तुम पर हे पीव मेरे।

जब होती मुखिया मैके की जननी
लगती लड़की तनया महारानी की
रखती माता क्षण - क्षण बेटी का है मन
वारूं तुम पर हे पीव मेरे अपना जीवन।

जब होता भाई मुखिया मैके का
कभी - कभी ही याद आती उस को बहना
भाई मेरे कितना ही समय हुआ हेरे
अपना जीवन वारूं तुम पर हे पीव मेरे।

जब होती मुखिया मैके की भगिनी
उन में कुछ ठनी हुई सी है रहती
उलाहनों से दोनों का है दहता तन
वारूं तुम पर हे पीव मेरे अपना जीवन।

●

सुन्दरी ! सुदिवस आज कौन सा ?

सुन्दरी ! सुदिवस आज कौन सा
मन तो हर ले गये पिया !

खुब में लगा हुआ है मेला
वहां रसिक दल आया है
वे भी वहीं सैर को आये होंगे जिन ने दर्द दिया
मन तो हर ले गये पिया !

मेला लगा जीठयार में
लोग आ गये नावों में
शाम ढले मनमीत आयेंगे आज बहुत ही प्रमन हिया
मन तो हर ले गये पिया !

मेले में हारी पर्वत के
नगर - ग्राम के आये हैं
उनके लिए सुनो री आली ! फूलों का संचयन किया
मन तो हर ले गये पिया !

सुन्दरी सुदिवस आज कौन सा ?
मन तो हर ले गये पिया !

आंचल संभालो री !

आंचल संभालो री आंचल संभालो
सल्मे-सितारों से सजा हुआ जो
तात के द्वारा तुम लाई गई हो
आंचल संभालो री आंचल संभालो
संग ले सर्वस लाये वे तुम को
आंचल संभालो री आंचल संभालो
पोसूंगी मैं मेरी लाडली तुम हो
आंचल संभालो री आंचल संभालो
पहुंचाने आया है भैया री तुम को
आंचल संभालो री आंचल संभालो
पहली बहू मेरी सुन्दरी तुम हो
आंचल संभालो री आंचल संभालो
लाड़ औ' मान से लाई गई हो
आंचल संभालो री आंचल संभालो
थिरक रही गृहस्वामिनि खुश हो
आंचल संभालो री आंचल संभालो
हेर रही कैसे तेरी छवी लो
आंचल संभालो री आंचल संभालो
हरियाली उपवन की तुम उपभोगो
आंचल संभालो री आंचल संभालो
संवारा तेरे लिए ही छज्जे को
आंचल संवारो री आंचल संवारो
भरी उमंगों से भाग्यवती हो
आंचल संवारो री आंचल संवारो
पाओगी ईश की करुणा तुम तो
आंचल संवारो री आंचल संवारो

1 यह गीत कश्मीरी स्त्रियां उस समय गाती हैं जब दुल्हिन ससुराल में प्रविष्ट होकर सजे-संवरे आसन पर बैठने को होती है।

पुत्र-जन्म का हर्ष

अपने घर में पुत्र - जन्म का हर्ष छा गया
अपने घर में पुत्र - जन्म का हर्ष छा गया
मैके वालो इस कारण तुम लाये क्या - क्या
अपने घर में पुत्र - जन्म का हर्ष छा गया
गुज़र गये जब हौले - हौले आठ महीने
नववें में मैंने इस प्यारे शिशु को जन्मा
दिवस तीसरे पकवाया भोजन चरुवे का
छूछक लेकर मेरा प्यारा पीहर आया
ग्यारहवें दिन मैं कमरे से बाहर आई
चले चाय के प्याले मन कितना हर्षाया।
बारहवें दिन मुन्ने को ज़ीने पर लाई
पुहुप खिला ज्यों नन्दन वन का सौरभ भीना
तेरहवें दिन आ गये सभी नैहर वाले
बहुत प्यार से उन ने मुन्ने को दुलराया
सुन्दर से झूले में मुन्ने ! हलराऊंगी
झुलवा दूंगी आंख के तारे चेरियों द्वारा
बुन लूंगी रंगीन स्वेटर तेरे कारण
काम नहीं ज़्यादा है यह बस है क्षण पल का
अन्नप्राशन जब करवाया मैंने लाल तेरा
थाल स्वर्ण का आग चढ़ा ही मंगवाया
जब मेरे प्यारे ! जन्म - दिवस तेरा आया
पकवान बने अगणित खुश हो कर गाया
चटशाला की ओर बढ़े जब क़दम तुम्हारे लाल मेरे
मंगल गायन किन्नरियों से ही करवाया
रोटी[1] देने को ख़ुद ही मैं निकली घर से
चिरंजीवी होगा लाल हृदय में यह आया।

●

1. किसी मगल कार्य के सम्पन्न होने पर कश्मीर में नान (रोटियां) बांटने की प्रथा है।

चुनरी गिरी

चुनरी गिरी मेरी चुनरी गिरी री !
वही न गिरी हो मैं घाट पै गई थी
चुनरी गिरी मेरी चुनरी गिरी री !
बहना उठाये तो वापस मिलेगी
चुनरी गिरी मेरी चुनरी गिरी री !
पथ पर गिरी जो तो मैंने वह खो दी
चुनरी गिरी मेरी चुनरी गिरी री !
जल्दी में उस को लो वायु ले भागी
चुनरी गिरी मेरी चुनरी गिरी री !
भैया उठाये उठवाई लेगा ही
चुनरी गिरी मेरी चुनरी गिरी री !

कैसे मैं सासू को सहन करूंगी

कैसे मैं सासू को सहन करूंगी
वह तो जलते चूल्हे में फैंकेगी
सहन करूंगी मैं तो जननी को ही
अपने तन से वह उतार कर देगी
कैसे मैं सासू को सहन करूंगी
अग्निदाह सी ही है बात ननद की
दे डाली बस उसने नाउम्मीदी
कैसे मैं सासू को सहन करूंगी
सहन करूंगी मैं तो बात पिता की
मेरे लिए दे देगा सम्पति सारी
कैसे मैं सासू को सहन करूंगी
ताड़क ने ही की यह हत्या मेरी
सासुर से हर तरह हार कर चल दी
कैसे मैं सासू को सहन करूंगी
वह तो जलते चूल्हे में फैंकेगी ।

कहवा पिला दो

कहवा पिला दो रे हम को
कहवा पिला दो रे हम को
बुरी बहुत कड़वी चा[1] तो
कहवा पिला दो रे हम को ॥

महंगी है चीनी
सेर चार रुपये की
यह भी कंट्रोल भाव है तो
कहवा पिला दो रे हम को ॥

महंगी है मकई
खरवार[2] चालीस की
रहा न न्याय कहीं भी तो
कहवा पिला दो रे हम को ।

चावल हैं महंगे
खरवार डेढ़ सौ के
बनियों ने फिर भी दबाये लो
कहवा पिला दो रे हम को ॥

1 कड़वी चाय : कश्मीरी लोग एक विशेष प्रकार की (पहाड़ी) चाय में दूध और नमक मिला कर पीते हैं। इसे शीर्य चाय कहते हैं। इसी प्रकार बनी हुई बिना दूध की चाय को 'ट्यठ' (कड़वी) चाय कहते हैं।

२ पुराना तोल जो लगभग दो मन के बराबर होता है।

लाडला लैला लाने चला री

लाडला लैला लाने चला री !
मेरा तन-मन हर्षाया
भेंट में वसन अनेक ले गया
मेरा तन-मन हर्षाया
लाडला लैला लाने चला री !
मेरा तन-मन हर्षाया
लौंग इलायची लाने गया री
मेरा तन-मन हर्षाया
लाडला लैला लाने गया री !
मेरा तन-मन हर्षाया
लाडली से मधु मिलन समीपा
मेरा तन-मन हर्षाया
लाडला लैला लेने चला री !
मेरा तन-मन हर्षाया
स्वाददार क्या खट्टी मुरई
मेरा तन-मन हर्षाया
लाडला लैला लाने चला री !
मेरा तन-मन हर्षाया ।

जैसे अनुग्रह किया लला पर

जैसे अनुग्रह किया लला पर पाम्पुर की
वैसे ही अनुग्रह कीजे प्रभु मुझ पर भी।

बारह बरस लला तप में ही लीन रही
और सुलगते तंदुर[1] में वह कूद गई
दिव्य-वसन पहने उस से बाहर निकली
वैसे ही अनुग्रह कीजे प्रभु मुझ पर भी।

अमिय-घूंट माता लला ने मधुर पिये
स्वयं सुपावन शिव-शङ्कर के नाम जपे
लेने आई स्वर्ग उसे अप्सरियाँ ही
वैसे ही अनुग्रह कीजे प्रभु मुझ पर भी।

●

1 तन्दुर=तन्दूर।

लो दन्तखोदनी चन्दन की[1]

लो दन्तखोदनी चन्दन की
ससुराल तुम्हारा नियराया।

जननी का प्यार भुला करके
सासू की प्रीत है पाई री!
अब सास ही तुम को पोषेगी
ससुराल तुम्हारा नियराया।

बहना का प्यार भुला करके
ननदी का प्यार है पाया री!
पालेगी तुम को निज संग ही
ससुराल तुम्हारा नियराया।

भैया का प्यार भुला करके
देवर का नेह है पाया री!
देवर तेरा पोषन-साथी
ससुराल तुम्हारा नियराया।

तात का प्यार भुला करके
सासुर का स्नेह है पाया री!
चिन्ता उस को तब पालन की
ससुराल तुम्हारा नियराया।

●

1 यह गीत कश्मीरी स्त्रियां उस समय गाती हैं जब दुल्हा दुल्हिन को लेकर घर में प्रविष्ट होने को होता है।

खुशियां छाईं[1]

मेरे मन में, नैहर में मेरे, खुशियां हैं छाईं
खुश होने की मैके की, मेरी बेला है आई।

आज प्रसन हैं राजलाल[2] लो औ' उसके सब भाई
मेरे मन में, नैहर में मेरे, खुशियां हैं छाईं।

मेरे अच्छे पीहर ने सारी खुशियां हैं पाईं
खुश होने की मैके की, मेरी बेला है आई।

●

1 यह गीत प्रायः विवाहित स्त्रियां अपने भाई के विवाह के अवसर पर मैके में गाती हैं।

2 नाम ! यहां गाने वाली अपने भाई का नाम ले लेती है।

मंगल-गीत

●

[कश्मीरी पण्डितों के ब्याह-शादी के गीत]

लीपा - पोती[1]

गायन का आरम्भ कर दिया 'शुक्लं' करके[2]
सुफल बहुत दे डाले हम को जगदम्बा ने।

शुरु हुआ गायन घर में वसुदेव[3] राजा के
सुफल बहुत दे डाले हम को जगदम्बा ने॥

ढूंढ के लाओ कोई पण्डित कहीं दूर से
शुभ मुहूर्त घर के लीपन का जो बतला दे।

ढूंढ के लाओ कश्यप ऋषि[4] को कहीं दूर से
शुभ मुहूर्त जो नृप वसुदेव को सोध के दे दे।

शुभ मुहूर्त पाया हमने नवपात्रा में ही
पालक श्री परमेश्वर ईश्वर दाता जग के॥

अप्सरियों ने है सींचा दण्डक वन को री
बांध के लाई हो झाड़ू उत्तम - उत्तम से।

---

1 कश्मीर में शादी की पहली रस्म घर की सफाई एवं लीपा-पोती है। इसी रात को संबन्धिनों एवं पड़ोसनों को बुला कर गाने-बजाने का आरम्भ किया जाता है। घर की सफाई एवं लीपा-पोती की रस्म को कश्मीर में 'गरुनावय' कहते हैं।

2 'शुक्लं' करके—विघ्नहर भगवान आदिदेव गणेश जी का ध्यान करके। कश्मीरी पण्डित प्रत्येक धार्मिक एवं अन्य कृत्यों का आरम्भ आदिदेव की निम्न अर्चना से करते हैं —
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं, प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये। ...आदि।

3 वसुदेव के स्थान पर गृहस्वामी का नाम लिया जाता है।

4 कश्यप-ऋषि; कश्मीर को बसाने वाले ऋषि। कहा जाता है कि पुराकाल में कश्मीर की घाटी एक विशाल सरोवर था। इस का नाम 'सतीसर' था कश्यप-ऋषि ने अपने तपोबल से इस सरोवर का पानी निकाल कर इसे निवास योग्य बनाया।

एक साथ ही चलें सखी दण्डक वन को हम
बांध के लायें उत्तम झाड़ू चलो वहीं से ।।

जल परात में भर, बुहार लो देहरी
निरखो फबन सलोनी सुन्दरता की

हेम - खोदनी रजत - बेलचे को ले करके
मिट्टी पावन ले आई शंकराचार्य[1] से ।।

हरमुख[2] के आगे का गंगा - जल[3] ले आई
इस से राजा हरिश्चन्द्र के घर को लेपा ।

---

1 शंकराचार्य—'शंकुराचार' नामक ३०५ मीटर ऊंची पहाड़ी । इस की चोटी पर पत्थरों से निर्मित सुप्रसिद्ध शिव-मन्दिर बना है । इस मन्दिर के संबन्ध में कहा जाता है कि इसे महाराजा अशोक के पुत्र जालुक ने लगभग २०० ई० पू० बनवाया था । इस के पश्चात् राजा गोपादित्य (२५३—३२८) ने इसे पुनर्निर्मित किया । श्रीनगर के वयोवृद्ध पण्डितों से मैंने सुना है कि वर्तमान मन्दिर को राजा सन्दिमत् ने निर्मित किया था ।

2 तथा 3—हरमुख नामक पर्वत को पार करके कश्मीर में 'हरमुकुट गंगा' नाम का पावन तीर्थ स्थान है । इस की महिमा गंगा के समान ही है । भारत में जितने तीर्थ स्थान हैं । वे सभी कश्मीर में विद्यमान हैं । कहा भी गया है—

भारतेयानि तीर्थानि तानि कश्मीर मण्डले ।

निमन्त्रण

आमन्त्रण देने को मैंने मंगवाया रथ सुन्दर सा
सोधवा ली मैंने पण्डित से इस कारण ही शुभ वेला।

एक स्वस्थ सुन्दर शुचि हाथी मंगवाया राजा जी का
उस को स्वर्ण मढ़े वस्त्रों-गहनों से कितना सजवाया।

उस पर ही मनहर छवि वाले कान्हा जी[1] को बैठाया
सोधवा ली मैंने पण्डित से इस कारण ही शुभ वेला।

देने चली निमन्त्रण तुम हो दाख बेल के नीचे से
अप्सरि-सी सुन्दर गजगामिनि भाग्यवती गृहस्वामिनि रे!

कंठहार सोने का जगमग पहने निकली तुम घर से
आमन्त्रण निज बन्धु गणों को प्रमन हृदय से आई दे।

अपने प्यारे मैके वालों के हां कदम रखा पहले
सप्तव्यंजनों संग खिलाया प्रेम सहित तुम को उन ने।

नमक रोटियां और मार्ग-व्यय[2] लाई तू निज पीहर से
आमन्त्रण निज बन्धुगणों को प्रमन हृदय से आई दे।

बहुत दूर से आमन्त्रण देने आई हो शादी का
गुच्छ गुलाबों के ले करके स्वागत को तत्पर भैया।

---

1 कान्हा जी के स्थान पर दुल्हे का नाम लिया जाता है।

2 कश्मीरी पण्डितों में यह रिवाज है कि जब लड़की ससुराल से मैके आती है तो उसे किलो भर नमक दो-तीन रुपये के नान तथा कुछ पैसे, जिसे 'अतुगथ' (मार्गव्यय) कहते हैं, दिये जाते हैं।

क्रूल[1] बनाना

चली गई देवी चढ़ने को वस्तूर वन में
स्वयं देव पथ-दर्शक हैं, सुन लो तुम उस से।

गई देवकी चढ़ने को वस्तूर जंगल में
वासुदेव तो स्वयं मार्ग-दर्शक हैं उसके।

पका देगची में तुम वरि[2] चूल्हा सुलगा लो
स्वर्ण विनिर्मित झाड़ू से निज द्वार बुहारो।

पका गई तुम शुद्ध स्वच्छ चूल्हे पर वरि लो
राजर्षी सम्पूज्य जनक की तुम बिटिया हो।

पका गई वरि सुन्दरी तुम हो बहुत प्यार से
सींचो सुमुखी सुमन सुगन्धित हर्षित हृदय ले।

हुए प्रफुल्ल गुलाब गुलाबों की बगिया में
हम ने पकवाई वरि अपने सुन्दर घर पे।

---

1 कश्मीरी पण्डितों में यह प्रथा है कि जिस रात को दुल्हे या दुल्हिन के हाथों तथा पैरों पर मेंहदी लगाई जाती है उस दिन घर के द्वार को विभिन्न रंगों के बेल-बूटों से चित्रित किया जाता है। घर के द्वार पर बनाई गई इसी चित्रकारी को 'क्रूल' कहते हैं। 'क्रूल' कश्मीरी पण्डितों की कलाप्रियता का द्योतक है।

2 'वरि'—खीर जैसे पके उन चावलों को कहते हैं जो कश्मीरी पण्डित 'गॅरुनावय या लिवुन' (लीपा-पोती) तथा 'मां'जिराथ' (मेंहदी) के दिन बनाते हैं। 'वरि' नमकीन होती है इस में तेल तथा मिर्च मसालों के अतिरिक्त मांस भी पड़ता है। यदि 'गरुनावय' 'या मां'जिराथ' अष्टमी, पूर्णिमा अथवा अमावस्या आदि दिनों में (जिन दिनों कश्मीरी पण्डितों के लिए मांस खाना वर्जित है) पड़े तो 'वरि' के साथ मांस के बदले अखरोट की गिरियां डाली जाती हैं। 'वरि' अपने संबन्धियों, मित्रों तथा पड़ोसियों में बांटी जाती है।

देना क्या चाहिये क्रूल बनाने के बदले में
नमक, वरि मन दो मन उत्तम से चावल के।

क्रूल बनाने वाली सुन्दरी ! सुन्दर क्रूल बनाया तुम ने
कुन्दन के वलयों से शोभित हैं तेरी यह गोरी बाहें।

घड़े क्रूल के[1] भर-भर लाई कुम्हारिन सुकुमारी वाला
दमक रहा है गेह दमकती अन्धियारे में ज्यों हो ज्वाला।

बांटेंगी लद्दाखी मीठी-मीठी सी खोबानी हम तो
क्रूल रोटियां[2] करें समर्पित आओ करुणामय देवों को।

●

1 क्रूल के घड़े—वे मिट्टी के घड़े जिन में विभिन्न रंग घुले हुए हों। इस पंक्ति से यह संकेत मिलता है कि संभवतः क्रूल बनाते समय कुम्हारिन नये घड़ों में रंग घोल के लाती थी। आजकल भी कश्मीर के गावों में ऐसी प्रथा है कि शिवरात्रि के दिन कुम्हार कश्मीरी पण्डितों के घर नये बर्तन ले कर आते हैं।

2 क्रूल रोटियां : क्रूल बनाने के समय चावल के आटे की रोटियां बनाई जाती हैं। किसी वयोवृद्ध द्वारा यह रोटियां देवताओं को समर्पित की जाती हैं। कई रोटियां देवताओं को समर्पित करने के पश्चात् शेष रोटियां प्रसाद (नैवेद्य) के रूप में ग्रहण की जाती हैं। 'वरि' के साथ इन्हें भी बांटा जाता है।

मेहंदो रात

मेहंदी रात मनाने कारण आमंत्रित कर दिया स्वजन को
आईं इसी निमित्त गंगा जमुना औ' सरस्वती भी खुश हो।

वांधव एकत्रित बैठे हैं वसुदेव[1] राजा के घर सारे
मेहंदी रात मनाने कान्हा जी[2] की हैं ये लोग पधारे।

तुलमुल[3] से राज्ञा देवी भी आई देने मंगल वर को
आई इसी निमित्त गंगा, जमुना औ' सरस्वती भी खुश हो।

मेहंदी रात मनाई हमने संयोजन से बन्धुगणों के
लक्ष्मी मिली हमें जगपालक करुणामय नारायण ही से।

मेहंदो - पादप को लो मैंने बड़ा किया है दूध - सींच कर
महादेव हर, गंगाधारी आज प्रसन्न हुए हैं तुझ पर।

आओ बैठो बैठक में हमरी ओ प्यारे पंसारी रे
मेहंदी-टहनी के लोगे तुम बतला दो रे पैसे कितने?

हुण्डियां आयीं घर में तेरे देखो बलराम जी ओ रे
मेहंदी-टहनी के दोगे तुम बतला दो कितने पैसे?

बनठन के लाई है मेहंदी चतुर सुवक्ता पंसारी ने
आज लगायेंगी मेहंदी हम हाथ-पैर पर राज पुत्र के।

---

1 वसुदेव तथा बलराम जी के स्थान पर गृहस्वामी का नाम लिया जाता है।

2 कान्हा जी के स्थान पर दूल्हे का नाम लिया जाता है।

3 तुलमुलः—कश्मीर का एक गांव जहां सुप्रसिद्ध अमृत-कुण्ड में महाराज्ञा भवानी (खीर भवानी) का मन्दिर है। यहां प्रत्येक मास की शुक्लाष्टमी को भक्तों की भीड़ लगती है। ज्येष्ठ शुक्लाष्टमी को यहां दर्शनार्थी हज़ारों की संख्या में माता के दर्शनों को आते हैं। माता के अमृत-कुण्ड के पानी का रंग बदलता रहता है। विशेष अवसरों पर भक्त-जनों ने कुण्ड के पानी की सतह के ऊपर 'श्रीचक्र' बनते भी देखा है।

बनठन के लाई है मेहंदी चतुर सुवक्ता पंसारी ने
आज लगायेंगी मेहंदी हम हाथ-पैर पर नृप-कन्या के।

पुड़े भरे हुए मेहंदी से तनिक-तनिक कर छानेंगी
मेहंदी रात मनायेंगी हम अपने प्यारे पुत्रों की।

मेहंदी स्वर्ग-पदारथ जैसी इस को पानी में डाला
किरपा कर इस ने सुगन्ध औ' सुवरण निज में पाला।

दूध पिलाई ! उठो कि बालो सुन्दर दीपक द्रुत गति से
बैठक में पहुंचा दो प्यारी सारे कुंडे मेहंदी के।

शुभ वेला में जन्म दिया औ' सुसमय तुम को पाला है
सिंहासन पर बैठा मेहंदी से रंग लूंगी तव कर मैं।

आदिकाल से मिलन हुआ है पारवती परमेश्वर का
दूल्हे के पावों पर मेहंदी का रंग दूंगी आज चढ़ा।

माता बलि-बलि जाये बेटे तेरी मधुर-मधुर बतियों पर
रंग दूंगी मेहंदी से तेरे मुन्दरियों से सजे हुए कर।

●

दिवुँगोन[1]

वेद सुनाये अपने प्यारे शिष्य को नेह से पंडित ने
और रात भर होम-निमित्त तैयारी करवा ली उस से।

जमुना का जल ले करके औ' माटी पावन गंगा की
मन में श्रद्धा भर भामिनि होम स्थल को लीपो री।

हरमुख के आगे का पावन जल मंगवाया है मैंने
और इसी से दिवुँगोन स्थल लिपवाया है श्रद्धा से।

दीवुँगोन के समारम्भ का कार्य कर रही गृहस्वामिनि तो
तिल, अखरोट और श्रीफल तुम उनके पास तुरंत पहुंचा दो।

कलश पूजने की वेला में दैव हुए अनुकूल तुम्हारे
पूजा करने ग्रहण तुम्हारी स्वयं अहो नारायण आये।

कलश पूजने बैठो लेकर कुंकुम औ' सिन्दूर सुहानी
तेरी जय जय इन्द्रदेव हो अमर लोक के पालक स्वामी।

---

1 दिवुँगोन—वह रस्म जो मेहंदी रात और बरात या यज्ञोपवीत संस्कार के मध्य होती है। दुल्हे या दुल्हिन अथवा जिस लड़के का यज्ञोपवीत संस्कार करना हो को मंत्राभिषिक्त जल से नहला कर होम करवाया जाता है। दुल्हा अथवा दुल्हिन इस स्नान के पश्चात् ब्रह्मचर्याश्रम को विदा कह कर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हो जाते हैं। इस स्नान को कश्मीरी पण्डित 'कलिश्नान' कहते हैं। इस स्नान के पश्चात् दुल्हे, दुल्हिन अथवा लड़के को ननिहाल वालों द्वारा लाये हुए कपड़े पहनाये जाते हैं। दुल्हिन को इस स्नान के पश्चात् ही डेजिहोर (सुहाग का आभूषण) तथा अन्य आभूषण पहनाये जाते हैं।

खिसक रही 'ट्यक्यपूच[1]' तुम्हारी भामिनि खोयापन इतना क्या
व्यस्त काम में तुम हो इतनी ध्यान नहीं कुछ पहनावे का।

राजा भिष्मक[2] के घर वाले 'दुरिबतुँ[3]' का सामान सजाते
स्वागत की तैयारी करते राजा दशरथ[4] के घर वाले।

चले वहां से खुश हो हो के रथों विमानों पर वे सारे
यहां समय पर गेह हमारे मंगल वेला सभी पधारे।

देखो दुरिबतुँ वाली भामिनियाँ पहुंची हैं द्वार सखी
ये हैं सब सम्पन्न सुसंस्कृत महिलाएं हिन्दुस्तां की।

बढ़ई ने चन्दन का निर्मित किया सुमंजुल इक पीढ़ा
सुन्दरि तुम इस को निज कर से कन्या-स्नान[5] के कारण ला।

भामिनि तुम ने कन्या स्नान का श्रीगणेश है कर डाला
उर में धर कर ध्यान दयामय जगपालक नारायण का।

---

1 पहले कश्मीरी पण्डिताइनें सिर पर मलमल का एक दुपट्टा जिसे चावल की पीछ लगा कर तथा सर्पाकार में ओट कर एक विशेष आकृति दी जाती थी पहनती थीं। इसे 'पूच' कहते हैं। इस 'पूच' के सिर पर बैठाने वाले भाग को सिन्दूर से स्वस्तिक चिन्ह और फूलों से चित्रित किया जाता है इसी को 'ट्यक्यपूच' कहते हैं। आज कल भी वयोवृद्ध पण्डिताइनें 'पूच' पहनती हैं। आज कल साड़ी का रिवाज है और कागज़ के ऊपर पन्ने से बने स्वस्तिक चिन्ह और फूलों को साड़ी के सिर पर रखने वाले पल्ले से चिपका कर 'ट्यक्यपूच' बनाई जाती है।

2 यहां दुल्हे या दुल्हिन के पिता का नाम लिया जाता है।

3 दिवुँगोन के दिन दुल्हे या दुल्हिन के मातृ-पक्ष वाले गहने कपड़े आदि की भेंट लेकर लड़की के घर आते हैं। लड़की से जो वय में छोटे होते हैं वे लड़की के घर खाते-पीते हैं। जो वय में बड़े होते हैं उन्हें खाने-पीने के बाद लड़की को पैसे देने पड़ते हैं। इस रस्म को 'दूरिबतुँ' कहते हैं।

4 यहां दुल्हे अथवा दुल्हिन के पिता का नाम लिया जाता है।

5 दिवुँगोन से पहले का स्नान। इसे ऊपर समझाया गया है

कन्यास्नानोपरान्त अहा धारण वसन अमूल्य किये
ये सब सुन्दर वस्त्र तुम्हारे आये मामा के घर से।

मैंने सुन्दर नग जड़वाये मुन्दरियों में हैं तेरी
बिटिया चांद सरीखी आभा से तू अब है दमक रही।

शुभ फलदायक हो 'ड्यजिहोर'[1] दे दिया पिता ने है तुम को
बिटिया तेरे पास सदा यह रहे सुमंगल वस्तु अहो!

इस के नीचे मोती की सुन्दर लड़ियां शोभा देंगी
बिटिया तेरे संरक्षण को रहे सदा नारायण ही।

1 कानों में पहनने का सोने का आभूषण। यह सोने की जंजीर (जिसे तालुँरज कहते हैं) से लटकता रहता है। इस के नीचे मोतियों या सलमे का बना हुआ एक गुच्छा-सा रहता है। इसे 'अटहोर' कहते हैं। 'डेजिहोर' कश्मीरी पण्डिताइनों के सुहाग की निशानी है। 'दिवुँगोन' पर ही इसे दुल्हिन को पहनाया जाता है। 'डेजिहोर' (तथा सोने के आभूषण) दुल्हिन को पिता के घर से ही मिलता है। यह तौल में कम से कम दो-तीन तोले का होता है। आकृति में यह षटकोण होता है।

यज्ञोपवीत संस्कार

अग्नि प्रज्वलित कर लो चन्दन - समिधाओं से
डालो इस में काष्ट - खण्ड ज्वाला ज्यों सुलगे।

सुन्दरि ! सुकुल समुत्पन्न दण्डक वन में जाओ
वहीं देवताओं से रक्षा[1] ले कर आओ।

प्रबुद्ध सुसंस्कृत वसुदेव राजा की बिटिया री!
रक्षा बान्धो उठो कि मंज़िल पर ऊपर की।

सद्मतदायिनि तनया भिष्मक राजा जी की
रक्षा पहने तुम ने तुम को बहुत बधाई।

नर्म बना दो पानी मल के नाई ! धीरे से बालों को
लम्बी चोटी में सुन्दर औ' चमकीले से मोती पोहो।

सोने का उस्तरा विनिर्मित वसुदेव राजा ने करवाया
स्वयं बृहस्पति देव गुरु लो तेरे मुण्डन को है आया।

सोने की तख्ती पर ले कर चांदी की लेखनी सुहानी
लिख लो प्यारे अपने कर से सब से पहले 'ओ३म्' अक्षर ही।

चरण-परस से गेह हमारा पावन कर दो द्विजो पधारो
हम बैठे हैं लिये तिलक औ' पुष्प अर्घ्य सब तव पूजन को।

शुभ वेला यज्ञोपवीत की बीत न जाये सावधान हो
हम बैठे हैं लिये तिलक औ' पुष्प अर्घ्य सब तव पूजन को।

---

1 यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर जिस बालक का यज्ञोपवीत संस्कार हो रहा हो उस बालक के कुल की सभी स्त्रियां रक्षा सूत्रों को सिर पर पहने जाने वाले विशेष पहनावे 'तरुग्गु' अथवा अपनी वेणियों में पहनती हैं। इस रस्म को कश्मीरी में 'नार्यवन खारुन्य' कहते हैं। स्त्रियां इसे एक शुभ-कर्म मानती हैं।

समिध-सुगन्धित-धूम-राशि फैली देखो है अखिल गगन में
पावन नगर काशी के सम्पूज्य वेद-विद् द्विज आये हैं।

वसुदेव नृप की बोई सींची लम्बे रेशों वाली रूई
कहो बनाये तुम से पावन वैदिक विधि से ब्रह्मसूत्र री!

देवकी मां ने ओटी रूई कन्याओं ने धागा काता
नारायण ने दिया जनेऊ तुम्हें कि जो है सब का दाता।

परबत[1] से शारिका भवानी प्रकटी तेरे हित को ही
आई पहनाने तुम को प्रिय स्वयं स्वकर से गायत्री।

अष्टादशभुज वाली ने की छाया तुम पर करुणा की
आई पहनाने तुम को प्रिय स्वयं स्वकर से गायत्री।

गंगा नीर औ' माटी लेकर पावन शंकराचारी[2] से
सुभद्रा[3] वारिदान[4] बनाई हिय में अतुलित नेह लिये।

अप्सरियों ने एकत्रित हो मोहक थल पर ठौर लिया
भाग्यवान जनक ने अपने आत्मज का उपनयन किया।

---

1 हारी पर्बत की सुप्रसिद्ध पहाड़ी जहां देवी के मन्दिर हैं। हारीपर्बत को सिद्ध पीठ माना जाता है। अनेक धर्मप्राण हिन्दू प्रतिदिन ब्राह्मी मुहूर्त में इस पहाड़ी की प्रदक्षणा करते हैं।

2 शंकराचार्य की प्रसिद्ध पहाड़ी जहां राजा सन्दिमत् द्वारा निर्मित शिव-मन्दिर है।

3 सुभद्रा के बदले बालक की बुआ का नाम लिया जाता है।

4 वारिदान : मिट्टी का बना हुआ वहनीय चूल्हा। इस चूल्हे पर मिट्टी के छत्तीस छोटे-छोटे बर्तन एक साथ आ जाते हैं और इन में भिन्न भिन्न भोज्य-पदार्थ पकाये जाते हैं। इस चूल्हे को बालक की बुआ सुलगाती है। इस के बदले गृहस्वामी बालक की बुआ को कोई सोने का आभूषण या नकदी देता है।

शतसहस्र योनियां अनन्तों जीवों की रे उल्लघन कर
तब पाई प्यारे है तुम ने यह ब्राह्मण-काया सुन्दरतर।

दिन भर गये पात्र को लेकर पाने सब से तुम भिक्षा
दे दी सब से पहले तेरी मौसी ने ही प्यार से आ।

'सध्योपासन' और 'स्नानविधि' श्रद्धायुत चित से पढ़ लो
समुचित बेला मनथिर करके प्यारे प्राणायाम करो।

वीर्य वचन[1]

(१)

करके होम व्यूग पर आया मेरा प्यारा
गया नदी तट संध्या करने राजदुलारा
लिया गोद में मामा ने अपना दृगतारा
गया नदी तट संध्या करने राजदुलारा
मधु चर्खे पर काता सूत्र तूश का सारा
करके होम व्यूग पर आया मेरा प्यारा
गया नदी तट संध्या करने राजदुलारा

1 'वीर्य-वचन' वे छोटे छोटे लोक-गीत हैं जो स्त्रियां बालक (जिस का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ हो) अथवा दुल्हे के घाट पर या ससुराल जाने पर 'व्यूग' (विभिन्न सूखे रंग-चूर्णों से बनाई अल्पना) पर नाचते हुए गाती हैं। घाट पर या ससुराल जाने से पहले लड़के को इस अल्पना पर थोड़ी देर के लिए खड़ा किया जाता है। अल्पना पर नाचते समय एक स्त्री फूलों का थाल लिए अल्पना पर खड़ी हो कर गाते गाते नाचती है। अन्य स्त्रियां अल्पना के इर्द गिर्द मण्डलाकार में खड़ी रहती हैं और गान की टेक को दुहराती हैं। लगभग प्रत्येक स्त्री क्रम से अल्पना पर खड़ी हो कर नाचती और गाती है। नाचते समय सभी स्त्रियां हाथ में थाल से फूल ले लेती हैं और उसे अल्पना पर नाचने वाली स्त्री के सिर पर घूमाती जाती हैं।

(२)

परवाना मंडराया शम'आ की लौ पर
वारूं अपना तन मैके पर खुश हो कर

जनक ! सहारा तव मुझ को है मंगल बर
वारूं अपना तन मैके पर खुश हो कर

परवाना मंडराया शम'आ की लौ पर
वारूं अपना तन मैके पर खुश हो कर

भैया का आधार मेरी खुशियों का घर
वारूं अपना तन मैके पर खुश हो कर

परवाना मंडराया शम'आ की लौ पर
वारूं अपना तन मैके पर खुश हो कर

●

विवाह-गीत

दूल्हे एवं बरातियों के स्वागत का गीत--

सागर का मोती हो जैसे ऐसा दूल्हा बिटिया का
लिए बराती इन्द्र-सदन में हौले-हौले से आया।

चले वहां से प्रातः को थे पहुंचे सायंकाल यहां
सिकुड़न दूर कराने बैठे वस्त्रों की क्या कहें कहां!

वन के चातक मनहर सर के राजहंस रे
पलकें थकीं हमारी तेरी बाट जोहते।

आये तुम बाज़ारों में से मधु-मिश्री का भोग लगाते
तेरी लैला को पलने में जनक-जननि तो अभी झुलाते।

अपनी बगिया में कितने ही सुमन खिल उठे टटके ताज़े
हेम सरीखी कन्या कोरी मोती-सा वर आया वरने।

आई है बारात बराती बड़ी गली से चलते आते
दूल्हा राज रहा है देखो मुक्तायुक्त छाते के नीचे।

ख्यात सुसम्पन्न चतुर पिता की राजकुमारी
रहो प्रफुल्ल जनेत पधारी राजा की-सी।

बरातियों को खाना खिलाने का गीत--

बड़े लाड़ से पाला तुम को है बिटिया तव तात ने
बिछवा दूंगी जनवासे में स्वर्णतार के गालीचे।

आओ समधी जी पंगत में थाल तुम्हारा सजवाऊं
बासमती-चावल-पुलाव खाने को तेरे परसाऊं।

अपनी राजकुमारी बिटिया बड़े जतन से पाली हम ने
चावल का हर थाल परोसो ज़रा ढंग से, बड़े प्रेम से।

बासमती-पुलाव पकवाया खास अतिथियों के खाने को
छत्रहार[1] पकवाया हमने अपने मित्रों के कारण तो।

हमने आप के खाने को हैं सात सब्जियां बनवाईं
दही डाल के बैंगन, पालक और सुस्वादु सुपच मेथी।

प्यास लगे तो अमिय पिला दो देखो दूल्हे राजा को
बारहदरि में सुन्दर आसन इन के कारण बिछवा दो।

कुंकम औ' सिन्दूर से हमने बनवाया है व्यूग तुम्हारा
करो प्रणाम सुमन से उर में ध्यान धरो श्रीसुरपतिजी का।

द्वारपूजा[2]

खोलो पलकें जागृत होओ री सुकुमारी बाला
आया द्वारपूजन को देखो अर्जुन अति बल वाला।

तेजस्वी ज्यों सूर्य हस्ति पर चढ़ कर आया प्यारा दूल्हा
आओ वामभाग में राजो करने दरवाजे की पूजा।

मोहनी मूरत वाले भिष्मक राजा के गुणशील तनय रे
पूजो द्वार ससुर के वर का यथारीति औ' समुचित विधि से

तेरे कारण ही लाई मैं पुष्प-गुच्छ ये बहुत सजीले
सुन्दरी पूजो द्वार सुगन्धित रंगबिरंगे इन फूलों से।

कन्या-दान—

देतीं हम आशीश हृदय से मंगलमय हो कन्यादान
चलो कि विटिया फेरे देने करे जगत्पति तव कल्याण।

---

1 कश्मीर में बोई जाने वाली धान की एक किस्म जो अब प्रायः नहीं के बराबर ही मिलती है।

2 बरात को खाना खिला कर या उस से पहले वर-वधू द्वारा द्वार की पूजा कराई जाती है उसे 'दारुपूजा' कहते हैं। यह शादी की एक आवश्यक रस्म है।

ओसिल फूलों से कर डालूं सुमुखी मैं तेरा अर्चन
आ पहुंचा शुभ लक्षिणि तेरा लग्न समय अति मन-भावन।

पारवती ! शिव वरने आये कर दो अर्पित निज तन-मन
आ पहुंचा शुभ लक्षिणि तेरा लग्न समय अति मन-भावन।

भाग चला घन-अन्धकार लो तेरी जगमग आभा से
दो दर्शन अब राम ! कि हम हैं प्यासे तेरे दर्शन के।

जगदम्बा ! अज्ञान दूर कर दे हम को द्रुत ज्ञान-रतन
आ पहुंचा शुभ लक्षिणि तेरा लग्न समय अति मन-भावन।

'गंगुँव्यस[1]' लेकर आई है पावन जल गंगा मैया का
'लायिबोय[2]' नन्हा-मुन्ना है बिलकुल कल के ही शिशु सा।

दिपती ऐसे मणि मुक्ताओं - मध्य दमकता है जैसे
किया सुहागवती तनया को अपनी श्रीनारायण ने।

प्यारी बिटिया दे दूंगी 'सतुँराथ[3]' सुहानी मैं तुम को
थाल चमच जग और बहुत से बरतन सुन्दर से खुश हो।

कई रतन दे कर लाई हूं प्यारे 'मनन माल[4]' तेरी
खाओ मिश्री स्वाददायिनी तुम को वत्स कसम मेरी।

---

1 जब दुल्हिन लग्न-मंडप में अग्नि के सामने लग्न-सस्कार के लिए बैठती है तो उस के मैके की कोई छोटी कन्या उस के दाहिनी ओर लाई जाती है। यह अच्छा शकुन माना जाता है। इसी कन्या को 'गंगुँव्यस' कहते हैं।

2 दूल्हे के घर का कोई छोटा बालक लग्न-संस्कार के समय दूल्हे तथा दुल्हिन पर खीलें फैंकता है, यह भी एक शुभ लक्षण माना जाता है। इस बालक को ही 'लायिबोय' कहते हैं।

3 वे बर्तन आदि जो लड़की (दुल्हिन) को मैके की ओर से दिये जाते हैं।

4 वह छोटी माला जो दूल्हे तथा दुल्हिन के सिरों पर 'व्यूग' पर बांधी जाती है।

मणि-मुक्ता औ' हेम अंगूठी दे दूंगी बिटिया तुम को
अपने वर के हाथों में अपने कर कोमल से दे दो।[1]

राधा मां ने बड़े लाड से पोसा है इस बाला को
ऐसा पोषण प्राप्त न होता इसे कहीं भी तो सुन लो।

खाने को पुलाव मटका भर दूध-दही मधु पीने को
अपने वर के हाथों में अपने कर कोमल से दे दो।

हाथ मिलाते हाथ न छूटे उर में इस का ध्यान रहे
री सुभाषिणी टुक बतियाओ अपने सुन्दर साजन से।

सात मुद्रिकाओं के ऊपर फेरे तेरे लगवाये
और अलग कर डाला तुम को इन ने अपने गोतर से।

पारवती शिव अर्धांगी हे 'पारन डून्य'[2] ग्रहण कर लो
कारण सुन कर निज आंचल में भर लो इन अखरोटों को।

फिर दे दो सासुर को इनको शुभ फल मिले तुझे इन से
क्रिया करो यह सती भवानी निज मुख समिध ओर करके।

चांदी के पाये लगवा कर सोने की थाली बनवा दी
लाऊं दूधाभाती[3] बिटिया तेरे कारण मैं इस में ही।

अपने प्यारे-प्यारे भ्राताओं की सुमुख छबोली बहना
फूल चढ़ाते हैं ये तुम पर इनकी प्रीति का वाह क्या कहना।

---

1 लग्न-संस्कार के दौरान वर अपने दायें हाथ से वधू का बायां हाथ तथा बायें हाथ से दाहिना हाथ पकड़ लेता है। इस रस्म को 'अथुवास' (हाथ मिलाना) कहते हैं।

2 लग्न संस्कार के दौरान दुल्हिन के आंचल में पांच, सात या नौ...अखरोट डाले जाते हैं। इन अखरोटों को दुल्हिन अग्नि की ओर मुख करके अपने ससुर को दे देती है। इन अखरोटों को 'पारनडून्य' कहते हैं।

3 दूल्हे और दुल्हिन को एक ही थाली में एक साथ ही लग्न-संस्कार के समय चावल खाने होते हैं इसे कश्मीरी में 'दयबतु' (दूधाभाती) कहते हैं।

ऋषि कन्या पावन सुकुमारी की पूजा फूलों से कर लो
कामदेवसम जामाता का अर्चन सुमन सुमनों से कर दो।

विदाई (डोली)—

पाल पोस कर बड़ा किया सौंपा अब तेरे हाथों में
कसम तुम्हें तुम ध्यान बहुत रखना इस बाला का दिल से।

यह है बहुत लाडली बाला और उच्चकुल की जन्मी
साहबज़ादे सुध निज उर में रखना क्षण-क्षण तुम इसकी।

हर पल तुम मन इतना रखना, यह है चांद पूर्णिमा का
भूले जननी-जनक भाई सब तुम कुछ ऐसा ही करना।

सुनो कि प्यारे दूल्हे राजा शिकन न लाना माथे पे
चार भाइयों की सुन लो प्रिय यह इकलौती बहना है।

साक्षी मान प्रभु को हमने सौंप दिया कन्या को आज—
तेरे हाथों, तेरे हाथों में ही है अब इस की लाज।

कुंकुम-केसर सी सुकुमारी इस का दिल न दुखा देना
परसन्तान बिचारी कन्या पल-पल इस की सुधि लेना।

कस्तूरी से लिखे हुए हैं तेरे साफे में जंतर
हर क्षण रखना प्यारे हमरी कन्या को तुम आंखों पर।

क्यों हो चिन्तालीन राम पर खोया क्या तेरा विश्वास
तेरी हर विधि सुख-सम्पति-सुविधा है तेरे पति के पास।

माता की विश्वासपात्र भंडारी प्राणों से प्यारी
भाग्यवती पतिगृह जाने की क्या कर दी है तैयारी?

प्यारी बिटिया अब तक तुम ने देखभाल की पूरे घर की
जाओगी पतिगृह अब तुम तो मैया तेरी बलिहारी री!

खाने को तुम को दी मैंने मधुमय लद्दाखी खोबानी
मां बलिहारी बेला टलती जाओ पतिगृह अब तुम रानी !

लड़के वालों के पौ बारह हुए कि तुमने पाया क्या
लड़की वालो ! खोया तुमने अपने दिल का ही टुकड़ा ।

आया सहमा सहमा सा-लड़के का पिता लिये बरात
लौटा हाथ फेरता मूंछों पर विधि है यह कैसी बात !

चौदह बरस रखा अपने घर दे दे कर उत्कोच तुम्हें
चली गई मेहमान-सी बिटिया छोड़ अकेला आज हमें ।

वीरय वचन[1]

(१)

स्वर्णहार पहना तो—
मेरा मन हर्षाया
आगे दूल्हा चला--
कि जिस की सुन्दर काया
पिता इन्द्रसम उसके—
पीछे पीछे धाया
स्वर्णहार पहना तो—
मेरा मन हर्षाया

सासुस्त्रोर गया मेरा—
बेटा मनभाया
मामा राजपुत्र सा उसका
उसके पीछे पीछे धाया
ले कर आयेगा सुन्दर सी दुल्हिन—
जिस की कंचन-काया
स्वर्णहार पहना तो—
मेरा मन हर्षाया।

●

1 ये गीत स्त्रियां उस समय 'व्यूग' पर नाचते हुए गाती हैं जब दूल्हा बरातियों के साथ अपने ससुराल की ओर जाता है।

(२)

चला कि मेरा प्यारा भैया
दुल्हिन लाने
चला कि प्यारा जनक हमारा
वधू-बुलाने
चला कि मेरा प्यारा भैया
दुल्हिन लाने
चला हमारा आंख का तारा
फूल भोगने
चला कि मेरा प्यारा भैया

(३)

प्यारा राजदुलारा हंसते —
चला है लैला लाने
भैयाओं का प्यारा हंसते—
चला है लैला लाने
ऊंचे कुल में जन्मा हंसते—
चला है लैला लाने।
अच्छी किस्मत वाला हंसते —
चला है लैला लाने।
प्यारा राजदुलारा हंसते —
चला है लैला लाने।

[कश्मीरी मुसलमानों के ब्याह-शादी पर गाये जाने वाले गीत]

खुत्तना

नापित ! तुम से कहना क्या अब स्वयं चतुरतर हो तुम तो
फिर भी कहने को कह देते ठीक रीति से सुन्नत हो।

खेलें घुंघचियां आओ हम खतने के मण्डल में
पार हुआ प्यारा इगतारा देखो तुम सागर के ।

रे हज्जाम ! निपट हो कर तुम सावधान करना यह काम
अपने घर हैं और कार्य भी रहे जुबां पर तेरा नाम।

बाप तुम्हारा लिखवा कर लाया है लो अमृतसर से
इसी लिए सम्पर्क में आये इतने अच्छे नाई के।

लैला के छवि वाले मनहर एलादाने से बेटे
आज प्रथम दिन ही प्यारे है खतने के सुन लो तेरे।

विवाह

बाल खोलना[1]

शुरु करेंगी गायन हम बिसमिल्लाह कर के
कार्य पूर्ण हो साहिब हम को ऐसा वर दे।

सब कुछ तो है नवी मुहम्मद की इच्छा ही
खोलो बाल कि लड़की दीखे हूर परी सी।

कच खोलेगी शालिमार की छांह-चिनारी के नीचे
अम्मा पिरो रही है घुंघरू अच्छे धागे में तेरे।

खोलेंगी हम केश तुम्हारा शालिमार मनहरता में
फूलों के नवहार सुमंजुल तेरा पिता पिरोता है।

सुन्दरतम हो बिटिया रानी तुम तो मनहर नर्गिस सी
केश खोल देंगी हम तेरा तुम तो बिजली हो कुल की।

खोलेंगी हम तेरा कच मंजुल फुलवारी के अन्दर
मैना प्यारी ! भाग्य-कुसुम तेरा महका है लो खिल कर।

मलूं फुलेल तुम्हारे कोमल रेशम जैसे बालों में
बिटिया गात सजा लूं तेरा सुन्दरतम मृदु अतलस से।

स्नान और वसन पहनाना—

त्यागो काई नीलनाग रे ! निर्मल स्वच्छ सुजल दे दो
स्वर्ण-बदन बिटिया का दूधिल करती हैं देखो हम तो।

साबुन की टिकियां लाया है पिता तुम्हारा उत्तम सी
मलो कि स्वच्छ बदन हो जाये मैल रहे न थोड़ा भी।

बढ़ई के घर से लाई हूं मोल पादुका उत्तम सी
पहना तुम को तेरे पांवों को मैं मल-मल धो लूंगी।

---

1 कश्मीरी मुसलमान लड़की की शादी का आरम्भ लड़की के बाल खोलने से करते हैं। कश्मीरी में इसे 'मस मुचरुन' कहते हैं। यह शादी की पहली और जरूरी रस्म है।

पहना दूंगी वसन कि जिस से निखरे आभा अंगों की
प्यारे अपने आप बांध लो स्वर्णविनिर्मित यह पगड़ी।

दिपती ग्रीवा कण्ठहार से पाँवों में पायल दिपती
सुन्दरी! सुभग सजीले पहनो बारी आई वसनों की।

तेरे आगे पीछे सखियां पहनाती हैं वसन शुभे!
कुसुमित यौवन को तेरे मेरा प्रभु अमृत से सींचे।

वसन तुम्हारे सोने के तारों से बनवाये हम ने
दुआ यही है खुदा सदा ही तुम पर अपना रहम करे।

पिता तुम्हारा सोने का जोड़ा लाया है सिलवा कर
अप्सरी! पहनो इस को अपने कोमल गोरे से तन पर।

क्षुर-क्रिया—

कटवा दूंगी बाल तुम्हारे बैठा कांच के पीढ़े पर
उदित हुआ सौभाग्य तुम्हारा मुदित हुआ है मम अन्तर।

शालिमार की हरी दूब पर कटवा दूंगी बाल तुम्हारे
पिरो रही है हार पुष्प के माता तव कारण ही प्यारे।

काटो बाल कि ऐसे नापित! इस में तेरी कला दिखे
बहुत नाम वाले हैं सासुर मेरे प्यारे बेटे के।

सोने के क्षुर से ही प्यारे तेरी दाढ़ी बनवा लूंगी
प्यारे दूल्हे राजा तुम पर अपना जीवन मैं वारूंगी।

बनवा दूंगी मूंछ तुम्हारी चांदी की कैंची से ही
अप्सरियों से ही मैं केवल मंगलगान करा दूंगी।

मेहंदी रात

मेहंदी के ऊपर है जगमग सुन्दर-सी इक अंगूठी
अरी लाडली ! तेरे कारण लो यह मेहंदी है आई।

आज तुम्हारे लिए बम्बुर[1] ने भेजी है उत्तम मेहंदी
घोड़ी चढ़ औ' डोली ले कर आयेगा वह तो कल ही।

मेहंदी-कूंडा घिरा हुआ है छोटे छोटे पात्रों से
आओ मौसी ! शुरू करो अब मन में अतुलित नेह लिये।

तेरे दोनों पावों पर हैं लेप चढ़ाती मेहंदी का
बलिहारी तू अपनी जननी का तो है पहला बच्चा।

मेहंदी से नाखुन रंगती हैं हाथों के तेरी माता
प्यारी-सी बुआ तेरी है गोदी में ले रही झुला।

पार्सल बाहर से आया है यहां इसे खुलवा दो
लगवा दो खुशबू वाली मेहंदी यह शब लैला को।

प्यारे पांपुर[2] से मंगवाई है मैंने उत्तम मेहंदी
केसर से रंग तेरे हाथों-पैरों में लगवा दूंगी।

प्यारे बलिहारी मैं तेरी बड़ी-बड़ी आयत आंखों की
पैर दाहिना आगे कर लो इस पर मेहंदी लगवा दूंगी।

मेहंदी फबती कोमल सुन्दर पावों में देखो लैला के
स्वर्णातार के कपड़े इस की सुन्दर काया पर लहराते।

---

1 राजतरंगिनी में वर्णित लोलरि का प्रेमी राजा बम्बुर येने दुल्हा।

2 प्राचीन पद्मपुर, जिसे ललितादित्य के मंत्री पद्म ने बसाया था। यह गांव कुंकुम की खेती के कारण प्रसिद्ध है। पांपुर जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय-मार्ग पर श्रीनगर से सोलह किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

परवाह न की कीचड़ पानी की रही विचरती तुम दिन भर
दुआ मांग लो जगत् पिता से मेहंदी-रंगे उठा निज कर।

तुम्हें टोकरी में मैं भर लूं खुशबू वाली मेहंदी री!
और तुझी से बढ़वा दूंगी शोभा सस्मित रानी की।

शीशमहल में लगा रही हैं मेहंदी देखो प्यारे को
व्यजन डुलाती रूमालों के औ' गाने गाती खुश हो।

स्वर्ण मुद्रिकायें मेहंदी पर जगमग-जगमग राज रहीं।
लाये तेरे लिये अरब के राजे अच्छी मेहंदी री!

खिले गुलाब रंगीले देखो अपने घर के पिछवाड़े
सुन्दरी! खुशियां संग लिये आये हैं अच्छे दिन तेरे।

आज खिली बगिया में तू है नेहिल गंधभरी चंपा री
तेरा भाग्योदय हो बिटिया अनुकंपा से परमेश्वर की।

आये अतिथि बहुत अपने घर करुणा हम पर करुणाकर की
सुन्दर फूलों के मृदु आसन इन के लिये सजा हम देंगी।

●

दूल्हे के ससुराल पहुंचने पर

दूल्हे एवं बरात का स्वागत—

असलाम - आले - कुम शहज़ादे प्यारे दूल्हे राजा रे
जगमग जगमग हुआ जगत् इगतारे तेरे आने से।

हुआ विलम्ब तनिक-सा क्यों कर तुम को आने में भाई
दूल्हे को लेकर बरात यह कहो देर से क्यों आई।

सासुर ने था दूत पठाया तुम्हें बुलाने को प्यारे
शहजादे तुम सोच समझ कर ठीक समय पर हो आये।

सावधान हो धीमी कर लो गति तुम अपनी घोड़ी की
नागिराय[1] रे! बल न पड़े फूलों सी काया में तेरी।

बंक-भृकुटि है तेरी सुन्दर पतले से रोमों वाली
आंखें नील-झील-सी जिस पर पड़ती ऊषा की लाली।

आसन तेरा सुन्दर गब्बा[2] पीछे सुन्दर सिरहाना
दमक रहे तुम ऐसे जैसे सुन्दर तारा अम्बर का।

ओ मिठबोले तेरी मीठी वाणी सुन शुक लजा गये
खाने को बादाम मधुर से दे दूं तुम को नये नये।

चले वहां से ठीक समय पर अब जब चांद उगा पहुंचे
यूसुफशाह[3] वरण करने लो हब्बा खातून को आये।

---

1 एक कश्मीरी लोक-कथा का नायक। हियमाल नामक सुन्दरी का प्रेमी।

2 कश्मीरी हस्तकला का प्रसिद्ध नमूना। गब्बा लोई या कम्बल को रंगकर तथा इस के ऊपर सुन्दर बेल-बूटे बनाकर बिछाने के लिए बनाया जाता है। अनन्तनाग के गब्बे बहुत प्रसिद्ध हैं।

3 यूसुफशाह चक (कश्मीर का एक मुस्लिम नरेश) जो हब्बाखातून नाम की एक कृषक कन्या के प्रणय-पाश में बन्ध गया और उसे अपनी रानी बनाया। हब्बाखातून एक अनिन्द्य सुन्दरी तथा कश्मीरी की एक प्रसिद्ध कवयित्री हुई हैं। हब्बा खातून तथा अरनिमाल के सुन्दर गीतों को कश्मीरी काव्य में एक उच्च स्थान प्राप्त है।

बारात को भोजन कराना—

नील नाग रे निर्मल जल की अविरल धाराएं तुम दो
कर-प्रक्षालन करते हैं बाराती इस क्षण टुक सुन लो।

बावरची! अनार सुमनों-से व्यंजन ठीक तरह परसो
भात खा रहे बाराती मन से इन की सेवा कर लो।

सौ सालन के साथ परोसा अन्न अतिथियों को हम ने
पीने को धर दिये सुघट उनके आगे मधु अमृत के।

नीचे बैठक में धीरे से लैला सुन्दरी तुम जाओ
क्या खाने का मन है अपने प्रियतम से यह कह आओ।

गृहस्वामिनि! नीचे बैठक में जाओ हौले-हौले से
क्या लोगे तुम ज़रा प्यार से प्यारे से पूछो जा के।

खाओ भात हृदय के टुकड़े लेना और ज़रा-सा भी
सुन लो हिम से भी उज्ज्वल औ' गोरी है नर्गिस तेरी।

निकाह—

आई निकाह-घड़ी तेरी लो सावधान अब तुम रहना
क्या-क्या लिखें इस कागज़ पर ज़रा ध्यान से तुम सुनना।

काज़ी साहब की अंगूठी में नग जड़ा हुआ नीला
औ' लिखते निकाह कागज़ पर होकर प्रमन लाडली का।

आज मनाते हंसते-हंसते हैं खुशियां बूढ़े-बच्चे
सुमन लिखे जाते निकाह हैं बड़ी शान से बिटिया के।

आये बड़े बड़े काज़ी हैं तेरा निकाह कराने को
राज़ी इस में बाप तुम्हारा भी है बिटिया तुम निरखो।

अलग अलग सुस्पष्ट पंक्ति में शब्द शब्द को अलग किये
कुंकुम-केसर और इत्र से निकाह लिखे जाते तेरे।

कागज़ यह निकाह का अब तो पूर्ण रूप से लिखा गया
मिलन हुआ दोनों का पाया तुमने जैसे प्रात नया।

लड़की को विदा करना

दिल भर आता कन्या अपने पति के घर जब जाती है
छा जाती रौनक इस क्षण में समधी के मुखमण्डल पे।

कौन भरोसे छोड़ा बिटिया! दीन पिता औ' माता को
पतिगृह जाने की तैयारी कर दी तुमने तो अब लो।

बिटिया रानी बिटिया रानी अरी स्वर्ग की देवी री
जननी-जनक की दृग-ज्योती री तुम हो आखिर पर-धन ही।

उठो कि बिटिया नीचे आओ आंगन में अब हौले से
धीरे-धीरे कदम बढ़ाती चढ़ो मनोहर डोली में।

कंचन निर्मित डोली चढ़ कर जाओ साजन के घर री
अप्सरी! दृगसीपों से अपने मत ढुलका दो यह मोती।

मन को अब समझाओ बिटिया दृगजल तुम बरसाओ ना
मैका दो दिन, पतिगृह ही तो है आश्रय हर कन्या का।

मैके का चाबी-गुच्छा तुम सौंपो अपनी माता को
उठो कि संभलो बिटिया रानी पतिगृह खुश हो के जाओ।

पहले अपनी माता और पिता से तुम आज्ञा मांगो
और बाद में स्वामी के संग निज पतिगृह का पंथ गहो।

अपने पूज्य पिता से आकर मांग रही आज्ञा बिटिया
मोती दृगसीपों से झरते भर आया इसका मन हा!

पूज्य पिता जी! समय समय पर सुध मेरी लेते रहना
कह के ऐसा ताराओं संग गगन-पंथ से चांद चला।

शरमीली हमरी बिटिया है पहुप सरिस कोमल प्यारी
कर दो हर क्षण इस पर छाया नबी! कि अपनी करुणा की।

अंटी का धर इस के सम्मुख दिल का राज़ बता देना
तुम्हें खुदा की कसम कि इस की सदा नेह से सुध लेना।

हमें सदा से रहा भरोसा अपने मुहम्मद साहिब का
अगर सुशील प्रबुद्ध हो तुम तो सदा ध्यान इस का रखना।

नहीं समझना डोली खाली खाली-सी है अन्दर से
कोमल तरंगी फूलों की लता कि बैठी है इस में।

सौंप रही हूं तुम्हें कि बिटिया! जगत् पिता परमेश्वर को
तेरी रक्षा करें मुहम्मद प्रति क्षण तुम पर खुश हो हो।

लड़की को विदा कर स्त्रियों का लौटना[1]

(१)

प्रिय सुन लो सुन्दरी ससुराल गई
भैया रे बहना ससुराल गई
मामा जी बिटिया ससुराल गई
चाचा जी बेटी ससुराल गई
पिता सुनो तनया ससुराल गई

(२)

बिटिया री राजा इन्दर की
लेने को आया मजनूं री
भेजा संवर कर उस-संग ही
लाया गले का हार री
पहना, तुम्हें भेजा संग ही
लाया वलय सोने के री
पहना, गया ले साथ ही
लाया सुवर्ण की मुन्दरी
पहना, गया ले साथ ही
अपने पिता की लाडली
भेजा संवर कर संग ही

1 कश्मीरी मुसलमान स्त्रियां गाते गाते लड़की की डोली के पीछे पीछे कुछ दूर तक जाती हैं फिर वहां से लौटते हुए तालियां बजाती हुई और नृत्य करती हुई उक्त प्रकार के गाने गाती हैं।

ससुराल जाते दूल्हे के साथ थोड़ी दूर तक उस के साथ जाकर स्त्रियों का लौटना।[1]

(१)

माता अपने प्यारे बेटे रुसतुम के साथ चली गाते
बहना अपने प्यारे भाई रुसतुम के साथ चली गाते
बुआ अपने प्यारे बेटे रुसतुम के साथ चली गाते
मौसी अपने प्यारे बेटे रुसतुम के साथ चली गाते
मामी अपने प्यारे बेटे रुसतुम के साथ चली गाते।

(२)

चांदनी छिटकी छज्जे पर है
घर अपना नियराया री!
छज्जे पर री सुन्दर संवरे
घर अपना नियराया री!
छज्जे पर री गृहस्वामी के
घर अपना नियराया री!
छज्जे पर री भैया जी के
घर अपना नियराया री!

●

1 कश्मीरी मुस्लिम स्त्रियां दूल्हे एवं बरात के पीछे पीछे थोड़ी दूर गाते गाते जाती हैं और वहां से तालियां बजाती, नृत्य करती और उक्त प्रकार के गीत गाते हुए लौटती हैं।

JAMMU AND KASHMIR
ACADEMY OF ART, CULTURE & LANGUAGES